भारत की लोक कथाऐं–2

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Bharat Ki Lok Kathayen-2 (Folktales of India-2)
Cover Page picture : Taj Mahal, Agra, India
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of India

विंडसर, कैनेडा

फरवरी 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
भारत की लोक कथाऐं–2 5
1 बिन बुलाया मेहमान 7
2 पत्थर का शेर 13
3 जादुई कपड़ा 27
4 स्वर्ग की यात्रा 34
5 खान के लिये मिठाई 45
6 बेवकूफ मगर 53
7 भूत जो भाग गया 60
8 दो बेटियॉं 69
9 सूअर इतने गन्दे क्यों 77
10 आधा आधा 84
11 राक्षस के लिये काम 92
12 छिपी हुई घाटी 101
13 पॉसा पलट गया 107
14 जौनपुर का काज़ी 114

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

भारत की लोक कथाऐं–2

इस सीरीज़ में, यानी "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज़ में, भारत की लोक कथाऐं प्रकाशित करने का कोई इरादा नहीं था। पर मुझे भारत की कुछ बहुत सामान्य लोक कथाऐं ऐसी मिल गयीं जिनको मैंने यहाँ लिख्र लिया। पर अभी भी इन लोक कथाओं को इस सीरीज़ में प्रकाशित करना इस पोजैक्ट का कोई उद्देश्य नहीं है।

दुनियाँ के सात महाद्वीपों में से एशिया महाद्वीप सबसे बड़ा है। इसमें रूस देश इसको क्षेत्रफल में बड़ा बनाता है और चीन और भारत जैसे देश इसको जनसंख्या में बड़ा बनाते हैं। भारत देश की जनसंख्या चीन देश से दूसरे नम्बर पर आती है। भारत में भी इतने सारे तरह के लोग रहते हैं कि कहते हैं कि यहाँ हर सौ मील की दूरी पर ख्राना पीना. रहन सहन, भाषा आदि बदल जाते हैं, फिर लोक कथाओं का तो कहना ही क्या।

भारत की लोक कथाओं का एक संकलन हम पहले ही प्रकाशित कर चुके हैं[1] जिसमें हमने भारत की कुछ समान्य मगर लोकप्रिय लोक कथाऐं दी थीं। अब यह दूसरा संकलन प्रस्तुत है "भारत की लोक कथाऐं–2"। इस संकलन में हम तुम्हारे लिये भारत के हिन्दी न बोलने वाले कई राज्यों की कुछ लोक कथाओं का संग्रह प्रस्तुत कर रहे हैं। ये सब लोक कथाऐं हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से इकट्ठी की हैं।[2] हो सकता है इनमें से कई लोक कथाऐं तुम लोगों ने सुनी भी होंगी पढ़ी भी होंगी।

तो लो पढ़ो ये सब लोक कथाऐं भारत के उन राज्यों की जहाँ हिन्दी बोली जाती है और जहाँ हिन्दी नहीं बोली जाती।

---

[1] "Bharat Ki Lok Kathayen-1" by Sushma Gupta in Hindi language.

[2] Taken from the Web Site : http://www.indianetzone.com/38/indian_folktales.htm

1 बिन बुलाया मेहमान[3]

यह लोक कथा भारत के आन्ध्र प्रदेश प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि आन्ध्र प्रदेश के एक गॉव में एक स्त्री रहती थी जिसका नाम था बुद्धिमती। बुद्धिमती का मतलब होता है एक स्त्री जो अक्लमन्द हो और बुद्धिमती अपने नाम के अनुसार ही वाकई में बहुत अक्लमन्द थी। कम से कम वह अपने पति विष्णुराव से तो हर हाल में ज़्यादा अक्लमन्द थी ही।

विष्णुराव ब्राह्मण था और एक पंडित का काम करता था। और सब गॉवों के पंडितों की तरह से वह भी अपने इस काम से बस इतना ही कमा पाता था कि अपने घर के खाने पीने का काम चला सके। पर कभी कभी वह इतना भी नहीं कमा पाता था।

फिर भी खुद गरीब होते हुए भी वह अपने दोस्तों को रिश्तेदारों जानने वालों को पड़ोसियों को और भी किसी को अपने घर बुलाना पसन्द करता था।

विष्णु राव को गली में भी कोई मिल जाता तो वह उसको खाना खिलाने के लिये अपने घर ले आता।

[3] Unwanted Guest – a folktale from AP, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/folktale_andhra_pradesh_indian_folktale.htm

बहुत से लोग उसके इस स्वभाव का नाजायज़ फायदा उठाते। वे यह दिखाते कि वे भूखे हैं और वे उसके घर खाना खाने चले जाते।

एक बार उसके अच्छे दिनों में उसके पास बहुत अच्छा खाना था। अब क्योंकि उसके घर में बराबर कोई न कोई खाने के लिये आता रहता था तो बुद्धिमती को खुद को कई बार भूखे रह जाना पड़ जाता था। कभी कभी उसके बच्चों को भी भूखे रह जाना पड़ता था ताकि उसका मेहमान ठीक से खाना खा सके।

बुद्धिमती को यह सब बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। उसने अपने पति विष्णुराव से कई बार इसके बारे में कहा भी कि वह अपने तरीके बदल ले पर उसकी प्रार्थना का उस पर कोई असर नहीं पड़ा सब बेकार गया।

रोज ही ऐसे बिन बुलाये मेहमान घर में आते रहे और बुद्धिमती हर रात इसका कोई हल खोजने में जाग जाग कर निकालती रही।

सोचते सोचते आखिर बुद्धिमती को एक विचार आया और उस विचार से वह इतनी खुश हो गयी कि उस रात वह सो ही नहीं सकी। बल्कि उससे तो अगले बिन बुलाये मेहमान के आने का इन्तजार भी मुश्किल से हो रहा था।

उसको बहुत देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा। अगले दिन दोपहर को जब विष्णुराव काम से घर आया तो उसके साथ एक ब्राह्मण भी आया। दोनों भूखे थे सो दोनों को खाना चाहिये था।

बुद्धिमती मुस्कुरायी और बोली — "खाना तैयार है आप नहा लीजिये।"

यह सुन कर विष्णुराव को थोड़ा आश्चर्य हुआ कि उस दिन उसके बिन बुलाये मेहमान को घर लाने पर भी उसकी पत्नी ने कोई चूँ चाँ नहीं की बल्कि वह कुछ खुश ही नजर आ रही थी।

वह खुश था कि उसकी पत्नी खुश थी। विष्णुराव ने अपने मेहमान के लिये एक चटाई बिछायी और नदी पर नहाने चला गया।

मेहमान चटाई पर बैठ गया। बुद्धिमती रसोईघर में जा कर कुछ बरतन इधर उधर करने लगी। कुछ देर तक तो वह मेहमान रसोईघर में बरतनों की खटपट की आवाजें सुनता रहा। फिर उसने देखा कि बुद्धिमती उस कमरे में आयी।

आ कर उसने कमरे का एक कोना बुहारा और उसको गाय के गोबर से लीपा पोता। फिर वह एक मोटा सा डंडा ले कर आयी जैसा कि लोग कपड़े धोने के लिये इस्तेमाल करते हैं। उसको उसने एक कोने में खड़ा कर दिया।

फिर उसने उस डंडे के आगे मिट्टी का एक दिया जलाया। उसको चावल प्लानटेन[4] और फूल चढ़ाये। हाथ जोड़ कर उसने फिर उसको बहुत नीचे तक

[4] Plantain is kind of banana except is much bigger than a banana found in Northern India. It is a tropical fruit and in India it is found mostly in Southern India. See its picture above.

सिर नवाया और उस मेहमान को लगा कि उसने उसकी कुछ प्रार्थना भी की।

उस ब्राह्मण ने ऐसा पहले कभी नहीं देखा था। उसको लगा कि बुद्धिमती वाकई पागल हो गयी है। उसने पूछा — "आप यह क्या कर रही हैं?"

बुद्धिमती ने अपना केवल एक हाथ हिला कर उसको चुप रहने को कहा और उस डंडे की पूजा जारी रखी। जब उसकी पूजा खत्म हो गयी तब वह ब्राह्म्ण की तरफ घूमी और बोली कि जब भी कभी उसका पति घर में कभी कोई मेहमान ले कर आता था तब वह हमेशा ही इस तरह से उस डंडे की पूजा करती थी।

यह सुन कर ब्राह्मण का दिल डूबने लगा। डूबते दिल से उसने इस अजीब रीति की वजह पूछी तो बुद्धिमती ने सीधे स्वभाव कहा कि वह ऐसा इसलिये करती थी कि भगवान उसके पति को माफ कर दें अगर उसका पति कभी मेहमान को मारे तो।

अब तो ब्राह्मण वहॉ से चौकन्ना हो कर उठ गया। बुद्धिमती ने उसको समझाना जारी रखा — "बात यह है कि मेरा पति कुछ सिरफिरा है। क्योंकि वह अपने मेहमानों को बहुत प्यार करता है इसलिये वह उनको बहुत तो नहीं मारता पर...।"

मेहमान को आगे सुनने की जरूरत नहीं थी। तब तक तो मेहमान वहॉ से यह जा और वह जा। उसने अपने जूते अपने हाथ

में उठाये और दरवाजे की तरफ भाग लिया। वह अपने जूतों को पहनने में भी समय बरबाद नहीं करना चाहता था।

उधर विष्णुराव नदी से नहा कर तभी वापस आ रहा था। ब्राह्मण को अपने घर में से इस तरह से इस आश्चर्यजनक गति से भागते देख कर वह खुद आश्चर्यचकित रह गया। उसने आश्चर्य से अपनी पत्नी से पूछा — "भाग्यवान क्या हुआ? अपने मेहमान इस तरह से क्यों भागे जा रहे हैं?"

बुद्धिमती बोली — "हमारे मेहमान यह कपड़े धोने का डंडा माँग रहे थे। मैंने जब इसको उनको देने से मना किया तो वह कुछ नाराज हो गये।"

विष्णुराव ने अपना सिर पीट लिया और कहा कि उसने मेहमान को नाराज क्यों किया। विष्णुराव ने तुरन्त ही वह डंडा उठाया और उन ब्राह्मण को इन्तजार करने के लिये कहता हुआ उनके पीछे पीछे भागा।

विष्णुराव की आवाज सुन कर ब्राह्मण ने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि उसका मेजबान तो उसके पीछे डंडा ले कर भागा चला आ रहा है।

यह देख कर तो वह और भी तेज़ी से भाग लिया। कुछ ही मिनटों में वह विष्णुराव की आँखों से ओझल हो गया और विष्णुराव दुखी होता हुआ घर वापस लौट गया।

घर आ कर उसने बुद्धिमती को मेहमान को वह डंडा न देने के लिये बहुत डॉटा। पर फिर उसने खाना खाया और इस घटना के बारे में बिल्कुल ही भूल गया।

लेकिन वह ब्राह्मण इस घटना को नहीं भूला। उसने सारे गॉव में यह बात फैला दी कि वे खाना खाने के लिये विष्णुराव के घर कभी न जायें। अगर वे गये तो वह उनको डंडे से मारेगा। लोगों ने उसका विश्वास कर लिया।

फिर जब भी विष्णुराव ने किसी को खाना खाने के लिये अपने घर बुलाया तो उसने उसको उसके घर आने से मना कर दिया। इस तरह से बुद्धिमती ने बिन बुलाये मेहमानों से छुटकारा पाया।

2 पत्थर का शेर[5]

भारत के हिमाचल प्रदेश में एक जगह है लाहौलस्पिटी। यह एक रेगिस्तानी जगह है और एक ऊँची जगह पर स्थित है। यहाँ के अधिकतर लोग जानवर चराते हैं और गड्डी जनजाति के हैं।

गरमियों में वे अपने जानवर चरा कर अपना काम चलाते हैं पर जाड़ा होने से पहले पहले वे नीचे की तरफ कुल्लू घाटी में आ जाते हैं।

जो लोग जाड़ों में वहाँ रह जाते हैं वे तो बस वहाँ अपने अपने घरों में ही बन्द रहते हैं। उस समय में वे ऊन साफ करते हैं धुनते हैं उसे कातते हैं और बुनते हैं। उसके वे शाल और दूसरे कपड़े बनाते हैं।

जब उनको समय मिलता है तो कहानियाँ भी कहते हैं। पत्थर का शेर उनकी कही गयी एक ऐसी ही कहानी है जिसको वे कहना बहुत पसन्द करते हैं। कहते हैं यह कहानी सौ साल पुरानी है।

एक बार की बात है कि वहाँ के पहाड़ों में एक गाँव था। असल में तो वह गाँव भी क्या था केवल पाँच सात झोंपड़ियाँ थीं जो पहाड़ी के एक तरफ बसी हुई थीं।

[5] Stone Lion – a folktale from HP, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/30/the_stone_lion_indian_folktale.htm

इनमें से एक झोंपड़ी दूसरी झोंपड़ियों से थोड़ा हट कर थी। इसमें एक लड़का रहता था उसका नाम था रॉचें।

रॉचें उस झोंपड़ी में अकेला ही रहता था क्योंकि वह एक अनाथ बच्चा था। पर वह दिल से बहुत ही खुश स्वभाव का बच्चा था। उसका रंग सॉवला था। वह पतला दुबला था और उसकी ऑखें हमेशा हॅसती रहती थीं।

उसकी आवाज बहुत अच्छी थी। उसको गाना बहुत अच्छा लगता था सो जब वह पहाड़ी रास्तों पर ऊॅचे नीचे जाता तो वह ज़ोर से गाता जाता। लोग भी उसका गाना सुन कर खुश होते क्योंकि उसका गाना उनको भी अच्छा लगता था।

वहॉ पर केवल एक आदमी था जिसको उसका गाना अच्छा नहीं लगता था और वह था वॉगू। वह उस गॉव का सबसे बूढ़ा आदमी था। वह एक ऐसा आदमी था जो किसी को भी खुश नहीं देख सकता था।

उसको तो बस और पैसा और जमीन और और भेड़ें चाहिये थीं। उस गॉव में जो लोग रहते थे वे भी वॉगू को कुछ बहुत पसन्द नहीं करते थे।

रॉचें के गॉव के लोग गड्डी[6] कहलाते थे। वे भी केवल भेड़ें चरा कर ही अपना गुजारा करते थे। रॉचें के अपने पास भी तीस भेड़ें थीं। वह उनकी ऊन बेच कर अपना गुजारा करता था।

[6] Gaddi

कभी कभी जब उसको ज़्यादा पैसे की जरूरत होती तो वह अपनी एकाध भेड़ भी बेच देता।

उसके पास खाने के लिये काफी सत्तू[7] था, पहनने के लिये दो बहुत गरम कमीजें थीं और सिर के ऊपर एक छत थी। उसको इससे ज़्यादा और कुछ चाहिये भी नहीं था।

सुबह सवेरे ही वह अपनी भेड़ें ले कर उनको चराने के लिये निकल जाता और अँधेरा होने से पहले पहले घर आ जाता। घर आ कर वह उन भेड़ों को रात के लिये बन्द कर देता अपना सत्तू खाता कुछ देर गुनगुनाता और फिर सो जाता।

यह एक सादा सी पर बिना किसी सुविधा के कुछ मुश्किल की ज़िन्दगी थी। पर रॉचें अपनी इस ज़िन्दगी से बिल्कुल सन्तुष्ट था। रॉचे अपनी भेड़ों को गॉव के पास के एक मैदान में ही चराने के लिये ले जाता।

एक दिन उसको लगा कि उस मैदान की घास बहुत कम हो गयी है और उसकी भेड़ों का पेट नहीं भरता सो उसने सोचा कि इसलिये अब उसको किसी दूसरे घास के मैदान में जाना चाहिये।

सो अगले दिन वह कुछ और जल्दी उठा। उसने अपना डंडा उठाया और दोपहर को खाने के लिये सत्तू लिया। अपनी भेड़ों को

[7] Sattoo is made of barley or black gram, after roasting their grains and grinding them. People eat that powder after mixing some sugar and water.

इकट्ठा किया और अपनी ऊँची आवाज में गाते हुए उनको ले कर किसी दूसरे घास के मैदान की खोज में चल दिया।

करीब एक घंटा चलने के बाद बाद वह एक पहाड़ी पर चढ़ा तो वहाँ तो उसके सामने एक गहरी घाटी फैली पड़ी थी। उस घाटी में टूटी हुई पत्थर की दीवार के टुकड़े फैले पड़े थे। ऐसा लगता था कि वह पत्थर की दीवार किसी पुराने किले की रही होगी।

उस दीवार के चारों तरफ घास उगी हुई थी। वह इतनी हरी और चमकीली थी कि उसको देख कर रॉचें का दिल खुश हो गया। उसने अपनी भेड़ों के लिये एक नया घास का मैदान पा लिया था।

रॉचें ने अपनी भेड़ें वहाँ चरने के लिये छोड़ दीं और खुद इधर उधर घूमने के लिये निकल पड़ा। जब उसका दोपहर के खाने का समय हुआ तो वह उस घाटी के एक तरफ को चढ़ गया जहाँ बैठ कर वह खाना भी खा सकता और वहाँ से अपनी भेड़ों को भी ठीक से देख सकता।

वहाँ वह बैठने के लिये कोई ठीक सी जगह ढूँढ रहा था कि उसकी नजर किसी चीज़ पर पड़ी। कुछ कदम की दूरी पर उसको जमीन में से एक पीली सी चट्टान ऊपर को निकली दिखायी दी जिसमें एक शेर खुदा हुआ था।

वह शेर इतनी अच्छी तरह से खुदा हुआ था कि वह बिल्कुल ज़िन्दा लग रहा था। उसका मुँह तो बन्द था पर आँखें पूरी की पूरी खुली हुई थीं। ऐसा लग रहा था जैसे कि वह शेर उस घाटी का

रखवाला हो और सैंकड़ों साल से उस घाटी की रखवाली कर रहा हो।

रॉचें एक बहुत ही अच्छे स्वभाव का लड़का था। वह सब लोगों से बात करना पसन्द करता था। सो वह उस शेर के पास जा कर बैठ गया और उससे बात करने लगा।

उसने शेर की तरफ अपनी दोस्ती का हाथ बढ़ाया पर वह तो क्योंकि एक पत्थर का शेर था तो वह तो कुछ बोला नहीं। रॉचें ने इसकी तरफ कुछ ध्यान ही नहीं दिया और अपना उससे परिचय करवाने में ही लगा रहा।

उसने उस पत्थर के शेर को अपने बारे में सब कुछ बता दिया। वह कहॉ रहता था। उसके माता पिता की मौत कैसे हुई। फिर कैसे वह अपना पेट पालने के लिये भेड़ें चराता था।

जब उसकी कहानी खत्म हो गयी तो उसने शेर के गले में बॉहें डाल दीं और वह जो सत्तू अपने खाने के लिये लाया था उसमें से उसने कुछ उसको खाने के लिये दिया।

रॉचें ने अपनी सत्तू की पोटली खोली और उसमें से थोड़ा सा सत्तू निकाल कर उसके सामने रख दिया। फिर उसने अपने हिस्से का सत्तू खाया और अपनी भेड़ों को देखने के लिये पहाड़ी के नीचे चला गया।

शाम ढलने से पहले उसने अपने दोस्त शेर से विदा ली अपनी भेड़ों को इकट्ठा किया और अपने घर चला गया।

आज रॉचें अपने आपसे बहुत खुश था क्योंकि उसको न केवल अपनी भेड़ों के लिये एक नया घास का मैदान ही मिल गया था बल्कि अपने लिये एक नया दोस्त भी मिल गया था।

अब वह उस घाटी में रोज पहुँच जाता। जब उसकी भेड़ें वहॉ पेट भर कर अपनी घास खाती रहतीं तो वह अपने नये दोस्त से दिल भर कर बातें करता।

जब उसके खाने का समय होता तो वह अपना सत्तू शेर के साथ जरूर बॉटता। उसको मालूम था कि शेर के हिस्से का सत्तू चिड़ियें खा जाती थीं न कि उसको शेर खाता था पर उसको यह जान कर बहुत ही सन्तुष्टि होती थी कि वह अपना खाना अपने दोस्त के साथ बॉट कर खाता था।

जब दिन खत्म हो जाता तो रॉचें शेर से विदा लेता अपनी भेड़ें इकट्ठी करता और गाता हुआ घर चला जाता।

इस तरह से तीन चार महीने बीत गये। अब मौसम बदलने लगा था। दिन अब पहले की तरह से गरम नहीं रह गया था रातें भी कुछ ज़्यादा ही ठंडी होने लगी थीं। जाड़ा आता जा रहा था।

लाहौलस्पिटी में बहुत ही कड़ा जाड़ा पड़ता था सो अब लोग वहॉ से नीचे कुल्लू की घाटी में जाने की तैयारी कर रहे थे। सारे गॉव वाले एक साथ चले। उनकी भेड़ों का एक बहुत बड़ा झुंड बन गया था।

उनकी सुरक्षा उनकी बड़ी गिनती में ही थी। क्योंकि अगर वे एक साथ होते तो रास्ते के डाकुओं से बरफ के तूफान से और जंगली जानवरों से एक साथ लड़ सकते थे।

जाड़ों की लम्बी रातें वे आग के चारों तरफ बैठ कर एक साथ गुजारते। एक आदमी पहरा देता जबकि दूसरे लोग बीच बीच में कुछ कुछ सो लेते।

पर रॉचें अपने इस नये दोस्त पत्थर के शेर से अलग होना नहीं चाहता था। पर वह दूसरों के साथ नीचे कुल्लू घाटी में जाने की महत्ता को भी समझता था सो आखिर उसने नीचे जाने का पक्का इरादा कर ही लिया।

अगली सुबह रॉचें अपने दोस्त पत्थर के शेर से मिलने के लिये गया तो उसने उसको बताया कि वह नीचे कुल्लू घाटी जा रहा है। उसको वहॉ जाना ही चाहिये नहीं तो अगर वह यहॉ रह गया तो जम कर मर जायेगा।

उसने शेर से यह भी पूछा कि जब वह वहॉ से चला जायेगा तो क्या वह उसको याद करेगा। रॉचें को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ जब उसने देखा कि उस शेर ने अपना मुँह खोल कर रॉचें को यह जवाब दिया कि वह रॉचें को उसके वहॉ से जाने के बाद वहुत याद करेगा।

उसबे रॉचे को यह भी बताया कि कुछ दिनों बाद वह भी वहॉ से हमेशा के लिये चला जायेगा। उसने कहा कि जाने से पहले वह उसको एक भेंट देना चाहता है।

रॉचे ने उससे मना भी किया कि उसके पास उसको जो कुछ चाहिये था वह सव कुछ था और उसको किसी चीज़ की जरूरत नहीं थी यहॉ तक कि उसके पास बहुत सारी भेड़ें थीं, एक घर था और खाने के लिये सत्तू भी थे। और इसके अलावा उसको किसी और चीज़ की जरूरत भी क्या थी। उसको किसी और चीज़ की इच्छा भी नहीं थी।

पर फिर भी शेर ने उससे अगले दिन सुबह सवेरे ही अपने पास आने के लिये ज़ोर दिया और एक थैला भी लाने के लिये कहा।

उसने कहा कि वहॉ आने पर रॉचें को उसका मुँह खुला हुआ मिलेगा। वह वहॉ आ कर उसके मुँह के अन्दर हाथ डाले और उसको वहॉ जो कुछ भी मिले उस सबसे अपना थैला भर ले।

पर यह सब उसको सुबह सवेरे सूरज निकलने से पहले ही करना पड़ेगा क्योंकि जैसे ही सूरज उन पहाड़ियों के ऊपर झॉकने लगेगा तो उसका मुँह बन्द हो जायेगा।

इस पर रॉचें हॅस पड़ा और बोला कि यह शेर उसको क्या दे सकता था। पर तब तक तो शेर का मुँह बन्द हो चुका था। अब रॉचें के पास और कोई चारा नहीं था कि वह अपनी भेड़ें ले और अपने घर चला जाये।

अगले दिन सुबह सवेरे रॉचें बहुत गहरी नींद सोया हुआ था कि एक कौआ उसकी झोंपड़ी के ऊपर से उड़ा और बोला जिससे रॉचें की ऑख खुल गयी और वह अपने बिस्तर से उठ बैठा। उसने अपनी रजाई तो उतार कर फेंक दी और खिड़की के पास भागा गया।

उसने देखा कि पूर्व की तरफ वस अभी रोशनी चमकी ही थी। उसने सोचा कि उसका दोस्त उसका इन्तजार कर रहा होगा सो वह तुरन्त ही घाटी की तरफ दौड़ गया। वह जब तक वहॉ पहुॅचा उसकी सॉस फूल रही थी।

शेर ने जैसे ही रॉचें को देखा तो उससे पूछा कि क्या वह अपने साथ थैला लाया था। रॉचें ने एक लम्बी सॉस ली और कहा कि वह थैला लाना तो बिल्कुल ही भूल गया पर उसकी टोपी उसके पास थी।

उसने तुरन्त ही अपनी टोपी उतारी और शेर के मुॅह में बेहिचक अपना हाथ डाल दिया। जब उसने अपना हाथ उसके मुॅह में से बाहर निकाला तो उसके हाथ में बहुत सारे सोने के टुकड़े थे।

उसी समय सूरज सबसे ऊॅची पहाड़ी के ऊपर से झॉका और शेर का मुॅह कस कर बन्द हो गया। रॉचें ने शेर को धन्यवाद दिया अपनी टोपी को दूसरे हाथ से ढका और खुश खुश घर भाग लिया।

रॉचें अभी अपने गॉव में घुसा ही था कि उसको वॉगू मिल गया। वह अपनी भेड़ों को चराने के लिये मैदान ले जा रहा था।

वॉगू ने सामने आ कर रॉचें का रास्ता रोक लिया और उससे पूछा कि वह इतनी सुबह सुबह कहॉ से आ रहा था।

फिर उसने रॉचे का हाथ उसकी टोपी पर से हटा दिया तो एक पल के लिये उसके नीचे से उसकी टोपी में रखे सोने के टुकड़े चमक उठे। वह रॉचें पर कूद पड़ा और उसको गरदन से पकड़ लिया।

वॉगू ने उस पर डाका डालने का इलजाम लगाया और उससे सोने के बारे में पूछा कि वह इतना सारा सोना उसके पास कहॉ से आया। साथ में उसने यह भी कहा कि अगर उसने उसको यह नहीं बताया तो वह उसको गॉव के सरपंच के पास ले जायेगा।

सरपंच का नाम सुनते ही रॉचें कॉप गया। उसने वॉगू को सारी कहानी बता दी। उसने वॉगू को उस घाटी का रास्ता भी बता दिया जहॉ वह पत्थर का शेर खड़ा था। वॉगू यह सुन कर बहुत खुश हो गया।

रॉचें वॉगू से यह सब कह कर अपने घर भाग गया और कुल्लू घाटी जाने के लिये अपना सामान बॉधने लगा।

उधर रॉचें कुल्लू घाटी में जाने के लिये अपना सामान बॉध रहा था इधर वॉगू उस पत्थर के शेर की घाटी की तरफ चल दिया।

अब वॉगू वहॉ रोज जाता और शेर के लिये बहुत बढ़िया बढ़िया मॅहगे मॅहगे खाने ले जाता जैसे याक के दूध का मक्खन जो इतना ताजा और सफेद होता जैसे ताजा पड़ी हुई बरफ।

या फिर पहाड़ों की मधुमक्खियों के सुनहरे शहद की शीशी। या फिर ताजा भुने हुए अनाज का सत्तू और या फिर चमड़े की बोतल में भरा हुआ मखनी दूध।

वह ये सब ले जाता और उस शेर के सामने रख देता। फिर हाथ जोड़ कर उसके सामने नीचे तक सिर झुकाता और एक तरफ को खड़ा हो जाता।

कभी कभी वह शेर को बोल बोल कर उकसाता भी कि वह उसकी दी हुई चीज़ों को स्वीकर कर ले। वह उससे अपनी बेवकूफियों और अपनी अज्ञानता की माफी भी मॉगता कि उसने उसको पहले यह सब क्यों नहीं दिया।

कभी कभी वह याक की पूँछ का पंखा भी बना कर ले जाता और शेर के पास खड़ा हो जाता और उसके ऊपर उड़ती हुई मक्खियॉ और मच्छर उड़ा कर उसकी चापलूसी करता। वह उससे बराबर बात करता रहता ताकि वह उसकी चापलूसी से खुश हो जाये।

पर उस पत्थर के शेर ने वॉगू के लिये कभी अपना मुँह नहीं खोला।

यह सब एक हफ्ते या कुछ और ज़्यादा दिनों तक चलता रहा। मौसम दिन ब दिन ठंडा होता जा रहा था। गॉव के लोग अपनी अपनी भेड़ों के साथ गॉव छोड़ चुके थे। पर वॉगू वहीं रहा।

उसके परिवार ने उससे बहुत कहा कि वह भी उनके साथ कुल्लू घाटी चले पर उसने जाने से मना कर दिया। आखिर वे उसको वहीं छोड़ कर उसके बिना ही चले गये।

अब वॉगू उस उजड़े गॉव में अकेला रह गया था। काले काले बादल आसमान में छाने लगे तो उसका धीरज छूटने लगा। अब उसको रॉचें ने जो उसको सारी कहानी सुनायी थी उस पर कुछ शक सा होने लगा। फिर भी उसने अपनी कोशिशें जारी रखीं।

आखिर वॉगू का धीरज काम आया और उसका अपने धीरज का फल मिला। एक दिन वॉगू ने शेर के सामने दलिये का कटोरा ले जा कर रखा और रोज की तरह से उसकी प्रार्थना की तो वह पत्थर का शेर एक बार फिर बोला।

उसने वॉगू को उसकी सेवाओं के लिये धन्यवाद दिया और उसको अगली सुबह आने के लिये कहा। उसने वॉगू से भी वही कहा जो उसने रॉचें से कहा था। वॉगू खुशी से नाचता हुआ घर चला गया।

घर जा कर उसने इधर उधर ढूँढ कर एक बहुत मजबूत सा थैला निकाला जिसे वह अनाज रखने के लिये इस्तेमाल करता था। उसे झाड़ पोंछ कर उसने साफ किया।

उस रात वह थैला अपने साथ ले कर सोया। पर उसको खुशी के मारे रात भर नींद नहीं आयी।

जब रात काफी बीत गयी तब वॉगू ने सोचा कि अगर वह वहॉ जल्दी पहुँच जायेगा तो वह शेर के मुँह से शायद ज़्यादा सोना इकट्ठा कर सकेगा सो वह काफी रात रहते ही वहॉ चल दिया।

उस समय सुबह के चार बजे होंगे जब वॉगू घाटी के लिये चला। उसने एक मोटा सा ऊनी शाल ओढ़ा एक ऐसी टोपी ओढ़ी जिससे उसकी ऑखों के सिवा उसका सारा चेहरा ढक गया।

एक हाथ में एक मोटा सा डंडा लिया और दूसरे हाथ में लालटेन ली। अपना थैला उसने अपने कन्धे से लटकाया और चल दिया।

बाहर बरफीली हवा चल रही थी। आसमान में काले काले बादल छाये हुए थे। पर वॉगू को वहॉ जाने का रास्ता पता था। वह तो इसी घाटी में पैदा हुआ था और यहीं बड़ा हुआ था। उसकी तो सारी ज़िन्दगी यहीं बीती थी।

पहले तो वह ठीक दिशा में चलता रहा पर अचानक उसका पैर एक बड़े से पत्थर से टकराया तो वह उसकी ठोकर खा कर गिर पड़ा और पहाड़ी से नीचे की तरफ लुढ़क गया। उसको तो कोई चोट नहीं आयी पर उसकी लालटेन गिर कर चूर चूर हो गयी।

रात अभी भी बाकी थी सो चारों तरफ अँधेरा ही अँधेरा था। वॉगू बिना लालटेन के ही चलता जा रहा था इसलिये वह रास्ता खो गया।

जब सुबह हुई तो उसने देखा कि वह तो पत्थर के शेर की घाटी से कहीं बहुत दूर निकल आया है और बुरी तरह से खो गया है।

आज तक उसका पता नहीं चल सका कि वह कहॉ गया। अगर तुम्हें वह कहीं मिल जाये तो हमें जरूर बताना कि वह कहॉ है उसके परिवार वाले अभी तक उसे ढूँढ रहे हैं।।

3 जादुई कपड़ा[8]

भारत के आसाम प्रान्त में बहुत सारी जनजातियॉ रहती हैं जिनमें बहुत सारी लोक कथाऐं प्रचलित हैं। हर जनजाति के अपने रीति रिवाज हैं, अपने अपने विश्वास हैं और अपनी अपनी लोक कथाऐं हैं।

इन जनजातियों में गाम और गारो[9] जनजातियॉ बहुत मशहूर हैं। गारो जनजाति के लोगों का कहना है कि वे मूल रूप से तिब्बत के रहने वाले है। तिब्बत चीन का एक प्रदेश है जो भारत के उत्तर में स्थित है। इसे "संसार की छत"[10] भी कहते हैं।

इस लोक कथा के बारे में यह तो पता नहीं कि पहली बार यह कब कही गयी थी पर यह वहॉ कई पीढ़ियों से चलती चली आ रही है।

एक बार की बात है कि आसाम के एक गॉव में गारो जाति का एक सरदार रहता था। क्योंकि उसके पुरखे भी जाति के सरदार रह चुके थे इसलिये वह काफी अमीर था।

[8] The Magic Wrap – a folktale from Assam, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/31/the_magic_wrap_indian_folktale.htm

[9] Gam and Garo tribes

[10] Tibet is called "Roof of the World" because it is situated at the highest altitude of the world. It is averagely 16,000 feet high.

उसका मकान वहॉ पर मिलने वाले सबसे मजबूत बॉस का बना हुआ था और उसके दरवाजे और खिड़कियों पर वहॉ की सबसे बढ़िया बेंत की चटाइयॉ पड़ी हुई थीं। उसके घर की दीवारों में बने हुए गड्ढों में चमचमाते हुए तॉबे के लैम्प जलते थे।

सरदार और उसकी पत्नी एक बहुत ही बढ़िया ज़िन्दगी बिता रहे थे। उनको अपना घर भी बहुत अच्छा लगता था और अपना जंगलों वाला देश भी जहॉ वे रहते थे।

पर सबसे ज़्यादा उनको अपनी बेटी प्यारी थी। वह उनकी अकेला बच्चा थी। वह देखने भालने में भी बहुत अच्छी थी और उसका स्वभाव भी बहुत अच्छा था। सरदार और उसकी पत्नी को अपनी बेटी पर बहुत गर्व था।

जब वह बड़ी हो गयी तो उसको अपनी ही जाति के एक नौजवान से प्यार हो गया। सरदार और उसकी पत्नी को भी लड़का बहुत पसन्द था सो उनकी शादी पक्की हो गयी। शादी के बाद दुलहा और दुलहिन दोनों ही सरदार के घर में रहने वाले थे।

शादी की शाम सरदार की पत्नी अपनी बेटी को घर के एक तरफ ले गयी और इसको बताया कि शादी में उसको दुनियॉ की सबसे मुलायम सिल्क के कपड़े और लाल और पन्ने से जड़े सोने के गहने दिये जायेंगे।

लेकिन उसके लिये एक और भेंट भी होगी जो इन सब कीमती चीज़ों से भी कीमती होगी।

फिर उसकी मॉ ने उससे फुसफुसा कर कुछ कहा और लकड़ी की एक मजबूत सी सन्दूकची निकाली जिसमें से उसने बहुत ही बढ़िया सिल्क का एक कपड़ा निकाला जिस पर इन्द्रधनुष के रंगों में हजारों फूल कढ़े हुए थे। वे फूल इतने चमक रहे थे कि ऑखों को चकाचौंध कर रहे थे।

वह लड़की तो उसको देख कर ही खुशी के मारे चीख पड़ी। उत्सुकता से उसने उसको छूने की इच्छा से अपने हाथ बढ़ाये पर मॉ ने बेटी को सावधान किया कि बिना उसकी कहानी जाने उसको उसे नहीं छूना चाहिये। तब उसने उसको उसकी कहानी सुनायी।

वह कपड़ा उसकी परदादी[11] को एक देवी ने उनकी शादी पर भेंट में दिया था जो तभी से यह मॉ से बेटी को दिया जाता रहा है। यह कोई साधारण कपड़ा नहीं है।

इसको छूने से पहले इसके ऊपर एक जादू पढ़ना चाहिये। अगर इसको कोई बिना इसके ऊपर बिना जादू पढ़े हुए छुएगा तो उस आदमी के ऊपर आफत आ जायेगी।

कह कर उसने अपनी बेटी को वे जादू के शब्द बताये। लड़की ने वे जादू के शब्द तुरन्त ही याद कर लिये और अपनी मॉ को यह विश्वास दिलाया कि बिना जादू के शब्द कहे हुए वह वह कपड़ा किसी हालत में में भी नहीं छुएगी।

[11] Translated for the word “Great Grandmother”

जब उसने मन भर कर उस कपड़े की तारीफ कर ली तो उसको फिर से सन्दूकची में रख दिया गया और सन्दूकची का ताला लगा दिया गया। अगले दिन शाम को लड़की की शादी हो गयी और वे दोनों खुशी खुशी वहीं सरदार के घर में रहने लगे।

लड़के को इस कपड़े के भेद के बारे में कुछ भी पता नहीं था। उसने जानने की कोशिश भी नहीं की। साल पर साल गुजरते गये। सरदार और उसकी पत्नी बूढ़े हो गये फिर मर गये। अब उनकी बेटी और दामाद दोनों बॉस के उस बड़े से घर में अकेले रह गये।

वह कपड़ा अभी भी लड़की के पास था। उसने इस डर से कि वह कहीं खराब न हो जाये उसे कभी पहना ही नहीं था। पर हॉ कभी कभी वह उसे सन्दूकची में से एक बार बाहर जरूर निकाल कर उसके फूलों को हवा लगाती थी। उस समय वे जवाहरात की तरह से चमकते थे।

हर साल में एक बार वह ऐसा करती थी और फिर तुरन्त ही हवा लगा कर उसे बन्द करके रख देती थी। वह उसको निकालने से पहले जादू के वे शब्द कहना कभी नहीं भूलती थी पर उसके पति को अभी भी यह पता नहीं था कि उस सन्दूकची में क्या था और न ही उसने कभी जानने की कोशिश की।

एक दिन सरदार की बेटी को लगा कि आज उस कपड़े को हवा लगानी चाहिये सो उसने चुपचाप जादू के शब्द पढ़े उस लकड़ी की सन्दूकची का ढकना खोला और उस कपड़े को बड़ी सावधानी से

निकाल कर बाहर फैला दिया ताकि उसको पहाड़ों की हवा लग जाये।

कुछ देर के लिये तो उस कपड़े के फूलों की चमक से बॅधी वह वहॉ खड़ी उसको देखती रही पर फिर उसको याद आया कि उसके पति ने अपने दोपहर के खाने के लिये उससे केंकड़ा बनाने के लिये कहा था।

सो उस कपड़े को वहीं वैसे ही सूखता छोड़ कर उसने एक टोकरी उठायी और केंकड़े लाने के लिये पास की एक नदी पर चली गयी। जब वह जल्दी जल्दी नदी की तरफ बढ़ी जा रही थी तो उसको उसका पति मिल गया। वह पास के गॉव से आ रहा था।

सरदार की बेटी ने उससे उस कपड़े का ध्यान रखने के लिये कहा पर किसी भी हालत में उसे छूने के लिये मना किया। पति ने उसकी बात सुनी तो पर उसने अपनी पत्नी की इस चेतावनी पर कोई ज़्यादा ध्यान नहीं दिया कि उस कपड़े को किसी भी हालत में नहीं छूना चाहिये।

इत्तफाक से जैसे ही उसकी पत्नी चली गयी काले काले बादल छा गये और बारिश शुरू हो गयी। पति को चिन्ता हो गयी। उसने अपनी पत्नी को जितनी ज़ोर से वह पुकार सकता था पुकारा पर बादलों की गरज बहुत तेज़ थी। उसकी आवाज बादलों की गरज और बिजली की कड़क की तेज़ आवाज में डूब गयी।

बारिश आती देख कर उसकी पत्नी भी जल्दी जल्दी घर लौटी पर इसके लिये उसको पहाड़ी पर चढ़ना था और वह उतनी तेज़ नहीं चल सकी।

जल्दी ही बारिश की बड़ी बड़ी बूँदें पड़ने लगीं और पति सचमुच में चिन्ता करने लगा। अगर उसने जल्दी ही कुछ न किया तो वह कपड़ा तो बिलकुल ही खराब हो जायेगा।

पत्नी की चेतावनी भूलते हुए वह तुरन्त ही बाहर गया कपड़ा उठाया और उसको ले कर अन्दर भागा।

पर जैसे ही उसने वह कपड़ा छुआ वह तो डर के मारे जम सा गया। उसने अपने अन्दर एक बदलाव महसूस किया। बिजली की चमक के समय के अन्दर ही वह एक बड़ी नर चिड़िया में बदल गया और वह कपड़ा उसके इन्द्रधनुषी पंख और पूँछ बन गये।

उसी समय भागती हुई उसकी पत्नी वहाँ आ गयी। चीखते हुए उसने उस कपड़े का एक छोर पकड़ कर खींचा जो तभी भी उसके पति के पंख नहीं बन पाया था और उसके पति के शरीर से लिपटा हुआ था।

उसने उस कपड़े को अपने पति के शरीर से अलग करने की कोशिश की पर जैसे ही उसने ऐसा किया वह खुद भी एक मादा चिड़िया बन गयी।

अब ये दोनों मोर और मोरनी बन गये थे। क्योंकि आदमी के शरीर पर उस कपड़े का एक बहुत बड़ा हिस्सा लिपटा हुआ था इसी

लिये मोर पर ज़्यादा और ज़्यादा चमकीले पंख हैं और उसकी इतनी शानदार पूँछ है। जबकि मोरनी के न तो इतने ज़्यादा पंख और इतनी शानदार पूँछ हैं और न ही वे चमकीले रंगों के हैं।

मोर मोरनी बन कर वे दोनों घर से बाहर उड़ गये। वे अब खाने के लिये दाना और नरम घास ढूँढने के लिये दूसरी चिड़ियों के साथ रहने लगे – कभी जंगलों में कभी खेतों में।

मोर हमारी सबसे सुन्दर चिड़िया है पर वह हमेशा ही अपने पंखों के बारे में चिन्तित रहता है।

जब बारिश के बादल आते हैं और आसमान में बिजली और बादल की गरज इधर से उधर दौड़ती है तब मोर बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाते हैं। लोगों का कहना है कि वे शायद बारिश से डरते हैं कि कहीं बारिश उनके पंख खराब न कर दे।

4 स्वर्ग की यात्रा[12]

यह लोक कथा भारत देश के बिहार प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है। यह कथा किसी को भी अच्छी लगेगी क्योंकि इसमें सब कुछ है सच्चाई, धर्म, कल्पना, किस्मत और हॅसी।

बहुत पहले बिहार में लोग बहुत गरीब थे तो ऐसी लोक कथाऐं उनको हॅसाने के लिये बहुत अच्छी रहा करती थीं।

बिहार के एक गॉव में छज्जू नाम का एक किसान रहता था। उसके पास जमीन का एक छोटा सा टुकड़ा था जिस पर वह मौसम की सब्जियॉ उगाया करता था जैसे बैंगन काशीफल फूल गोभी।

हालॉकि वह सब ज़्यादा तो नहीं होती थीं पर फिर भी छज्जू के लिये वे काफी होती थीं। वह अपने उस खेत पर मेहनत से काम करता था और चैन की नींद सोता था क्योंकि वह एक सन्तुष्ट आदमी था।

एक बार जाड़ों में छज्जू ने फूल गोभी की फसल उगायी जो बहुत ही अच्छी हुई। उसकी ताजा सफेद फूल गोभी की फसल की तारीफ करने के लिये लोग दूर और पास सभी जगह से आये।

एक दिन छज्जू की पत्नी ने छज्जू से कहा कि उनकी फसल की तो सारे गॉव में चर्चा हो रही थी सो कुछ लोग उसको चुराने की भी

[12] A Trip to Heaven – a folktale from Bihar, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/33/folktale_bihar_indian_folktale.htm

कोशिश कर सकते थे तो उसको रात को उसकी पहरेदारी के लिये खेत में ही सोना चाहिये।

छज्जू को अपनी पत्नी का यह विचार बहुत अच्छा लगा सो उसने अपने खेत के ठीक बीच में बॉस का एक ऊँचा सा प्लेटफार्म बना लिया और उसके ऊपर पत्तों की एक छत बना ली। इस प्लेटफार्म के ऊपर उसने एक चादर बिछा ली और उसका बिस्तर तैयार हो गया।

उस शाम को जब परिवार ने खाना खा लिया छज्जू ने अपनी पत्नी और बच्चों को मकान में छोड़ा और अपने खेत में बने प्लेटफार्म की तरफ चल दिया और वहॉ जा कर उसके ऊपर चढ़ गया।

सारे दिन काम करके वह थक गया था सो लेटते ही वह सो गया और सुबह होने तक सोता ही रहा। सुबह को वह वहॉ से घर लौट आया और फिर अपने दूसरे दिन का काम शुरू कर दिया।

अगले दिन भी जब वह वहॉ सोने गया तो वही हुआ जो पिछले दिन हुआ था। वह वहॉ गया तो जल्दी ही सो गया और सुबह तक सोता ही रहा।

तीसरे दिन जब वह फिर से अपने उस प्लेटफार्म पर सोने गया तो बीच रात में वह किसी चीज़ की आवाज से जाग गया। वह उठ कर बैठा हो गया तो उसने देखा कि चारों तरफ शान्त पड़ा था और

सारा गॉव सोया पड़ा था। यहॉ तक कि जंगल के गीदड़ भी शान्त थे।

छज्जू ने फिर चारों तरफ देखा तो कुछ देख कर वह आश्चर्य में पड़ गया। उसने देखा कि एक चमकीला सफेद बादल आसमान से नीचे उतर रहा था।

छज्जू उस बादल को नीचे उतरता देखता रहा। वह सीधा उसके गोभी के खेत में आ कर उतर गया। उसमें से एक हाथी निकला पर उसने देखा कि वह कोई साधारण हाथी नहीं था। वह हलके सलेटी रंग का हाथी था और ऐसे चमक रहा था जैसे कोई चॉदी चमकती है।

हाथी ने अपनी सूँड़ फैलायी, एक गोभी का फूल उखाड़ा और बड़े तरीके से उसे अपने मुँह में रख लिया। फिर दूसरा फिर तीसरा। छज्जू बेचारा मजबूर सा उसको इस तरह से अपने खेत के गोभी के फूल खाते देखता रहा। उसने करीब करीब उसके बीस फूल खा लिये थे।

जब उसका पेट भर गया तो वह फिर से अपने बादल के अन्दर चला गया। बादल फिर से आसमान की तरफ उठा और छज्जू की ऑखों से ओझल हो गया।

बहुत देर तक छज्जू वहॉ बैठा बैठा उसके बारे में सोचता रहा। जब उसको कुछ होश आया तो वह यह सब अपनी पत्नी से कहने के लिये घर दौड़ा गया।

उसकी पत्नी तो गहरी नींद सो रही थी। छज्जू ने उसको ज़ोर से हिला कर जगाया और उसको सब कुछ बताया। पर वह उसका विश्वास क्यों करने लगी। उसने कहा कि तुम सपना देख रहे होगे।

अगली रात को छज्जू जागता ही रहा। यकीनन वह हाथी उस रात फिर आया। पिछली रात की तरह से उसने फिर पेट भर कर गोभी के फूल खाये और फिर अपने उसी रास्ते वापस चला गया जिस रास्ते से वह आया था।

यह देख कर छज्जू फिर से यह सब कहने के लिये अपने घर वापस दौड़ा गया। इस बार उसकी पत्नी ने उसका विश्वास कर लिया और बोली कि वह हाथी तो सीधे स्वर्ग से आया था। वह देवराज इन्द्र का हाथी था और उसका नाम ऐरावत[13] था।

छज्जू की तो यह सब सुन कर बोली ही नहीं निकली। उसकी पत्नी एक पंडित की बेटी थी और ऐसी बहुत सारी बातें जानती थी जो वह नहीं जानता था।

अचानक उसने छज्जू की बॉह पकड़ ली और उससे बोली कि अगली बार जब वह उसके देखे तो उसकी पूँछ पकड़ ले। इस तरह से वह उसकी पूँछ पकड़ कर स्वर्ग का एक चक्कर लगा सकेगा।

पहले तो उसको पत्नी की बात कुछ समझ में नहीं आयी पर फिर जब उसकी पत्नी ने उससे कई बार कहा तो ऐसा करने की उसने हिम्मत बटोर ली।

[13] Indra is the King of gods and Airaavat is the name of his elephant.

वह तो केवल इसी विचार से बहुत डरा हुआ था कि वह हाथी की पूँछ पकड़े पकड़े आसमान में उड़ेगा कैसे। पर किसी तरह से उसने हिम्मत कर ही ली।

सो अगली रात जब हाथी फिर से उसके खेत में आया और अपने बादल में ऊपर जाने लगा तो छज्जू भी उसकी पूँछ से लटका हुआ था।

छज्जू ने स्वर्ग में पूरे चौबीस घंटे गुजारे और उसका कितना बढ़िया समय गुजरा। स्वर्ग कितनी सुन्दर जगह थी। उसकी सड़कें चाँदी से जड़ी हुई थीं। वहाँ सोने के महल बने हुए थे।

जब वह चलते चलते थक गया तो बस उसने एक साफ नदी के ठंडे पानी में अपना चेहरा धो लिया और बस वह ताजा हो गया। उसकी सारी थकान मिट गयी।

वहाँ का वातावरण चिड़ियों की चहचहाहट से गूँज रहा था फूलों की खुशबू से महक रहा था। पर छज्जू को जो वहाँ सबसे ज़्यादा अच्छा लगा वह था वहाँ का रसोईघर।

स्वर्ग के रसोईघर के बीचोबीच गरमागरम हलवे का एक बहुत बड़ा बरतन रखा था जिसमें से इलायची की खुशबू उड़ रही थी। और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि वहाँ उसको उसे लेने से कोई रोकने वाला भी नहीं था।

छज्जू उसी तरह से धरती पर वापस आ गया जैसे वह गया था यानी हाथी की पूँछ पकड़ कर। जब वह धरती पर वापस आ गया तो वह तो ऐसे चल रहा था जैसे वह अभी भी सपना देख रहा हो।

यह सब केवल वही नहीं था जो उसने वहाँ देखा था बल्कि वह हलवा था जो उसने वहाँ खाया था। अब तो वह सिवाय हलवे के और किसी चीज़ के बारे में सोच ही नहीं पा रहा था।

उस रात वह सो नहीं पाया। दिन निकल आया तो बजाय खेतों पर काम पर जाने के वह अपने घर के सामने बैठ गया। वहाँ से गाँव के कुछ दूसरे लोग अपने काम पर जा रहे थे। वे छज्जू को इस तरह बैठे बैठे सोते देख कर बोले कि वह सुबह सुबह क्यों सो रहा था।

छज्जू बोला कि कल उसने बहुत सारा हलवा खा लिया था इसलिये उसको अभी भी नींद आ रही थी। लोग उसका यह जवाब सुन कर आश्चर्यचकित थे। कुछ और लोग वहाँ से निकले तो सब छज्जू के चारों तरफ इकट्ठा हो गये और पूछने लगे कि उसको इतना सारा हलवा कहाँ से मिला।

छज्जू की पत्नी ने यह सब देख कर छज्जू को मना किया कि वह किसी से भी हलवे की बात न करे। पर जब गाँव के बहुत सारे लोगों ने उससे हलवे के बारे में पूछा तो वह अपनी पत्नी की चेतावनी बिल्कुल ही भूल गया। उसने बड़े गर्व से कहा कि उसने वह हलवा स्वर्ग में खाया था।

यह सुन कर गॉव के दूसरे किसानों को लगा कि आज छज्जू पागल हो गया है। उन्होंने छज्जू को सलाह दी कि उसको वैद्य जी[14] को दिखाना चाहिये।

पर फिर धीरे धीरे उनको छज्जू की बात का विश्वास हो गया। एक एक करके उन्होंने अपने जूते निकाले और छज्जू के चारों तरफ एक गोला बना कर बैठ गये। वे सब भी उसके साथ स्वर्ग जाना चाहते थे और हलवा खाना चाहते थे।

छज्जू ने अपनी सारी ज़िन्दगी में लोगों की इतना ध्यान कभी नहीं खींचा था। यह सब देख कर वह तो फूल कर कुप्पा हो रहा था कि लोग उसको इतनी इज़्ज़त दे रहे थे। बिना एक पल सोचे वह बोला कि वे सब उसके साथ स्वर्ग जा सकते थे।

वह खुद उस हाथी की पूँछ पकड़ लेगा और दूसरा आदमी पीछे से उसका कुरता पकड़ लेगा। तीसरा आदमी दूसरे आदमी का कुरता पकड़ लेगा और इस तरह से कई आदमी एक साथ स्वर्ग जा सकते थे।

यह तरकीब सुन कर तो सारे लोगों में खुशी की लहर दौड़ गयी और सब बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगे। अब क्या था यह खबर तो सारे गॉव में आग की तरह फैल गयी।

उस दिन गॉव के सारे आदमी नदी में बहुत देर तक नहाये और उन्होंने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने। न तो स्त्रियॉ जा रही थीं

[14] Vaidya Ji is the traditional doctors in India.

और न ही बच्चे जा रहे थे पर हलवा उन सबको चाहिये था। सो आदमियों ने कहा कि वे उनके लिये हलवा अपनी जेबों में भर कर ले आयेंगे।

जब उनसे यह कहा गया कि वे अपने साथ थैला ले जायें तो उन्होंने कहा कि वे थैला नहीं ले जा सकते थे क्योंकि वे अपने दोनों हाथ कुरता पकड़ने के लिये खाली रखना चाहते थे।

पर यह समस्या तब तक बनी रही जब तक किसी ने लटकाने वाले थैले के बारे में नहीं सोचा। और यह दिमाग में आते ही स्त्रियों ने बोरियों के साड़ियों के पुराने पाजामों के लटकाने वाले थैले सिलने शुरू कर दिये।

जब शाम हुई तो सारे लोग छज्जू के खेत के पास एक लाइन में खड़े हो गये। खुशी के मारे उनके दिल धड़क रहे थे और मुँह सूख रहे थे।

रात हुई। काफी अँधेरा हो गया। पहले तो गॉव के उस पार से जंगल से गीदड़ चिल्लाये पर जल्दी ही वे शान्त हो गये। यहॉ तक कि गॉव के कुत्ते भी शान्त थे। उन्होंने भी भौंकना बन्द कर दिया था।

सब कुछ शान्त था कि एकाएक सभी लोगों की सॉस रुक सी गयी। एक चमकीला सफेद बादल आसमान से उतर रहा था। वह आ कर छज्जू के गोभी के खेत में उतर गया और उसमें से चॉदी का एक हाथी बाहर निकला।

लोग तब तक धीरज से शान्तिपूर्वक खड़े रहे जब तक हाथी ने पेट भर कर फूल गोभी खायी। उसके गोभी खाते ही छज्जू उसकी तरफ दौड़ा और उसने जा कर उसकी पूँछ पकड़ ली।

लोगों में कुछ भगदड़ मची क्योंकि हर आदमी छज्जू का कुरता पहले पकड़ना चाहता था। पर जल्दी ही वे सब लाइन में लग गये। सबने एक दूसरे का कुरता कस कर पकड़ लिया।

धीरे धीरे बादल ऊपर उठने लगा। उसके साथ उठा हाथी और हाथी के साथ उठे छज्जू जी और फिर एक एक करके सारे गॉव वाले। सबसे पीछे था गॉव का सबसे मोटा आदमी।

स्वर्ग की यात्रा लम्बी थी। लोगों ने हलवे के लिये सारा दिन इन्तजार किया था। सो आधे रास्ते पहुँच कर उनका धीरज छूट गया। वह जो आखीर में सबसे मोटा आदमी था वह सबसे ज़्यादा उत्सुक था।

उसने अपने आगे वाले आदमी से पूछा कि क्या वहॉ पर हर आदमी के लिये काफी हलवा होगा। अब उस आदमी को तो क्योंकि पता नहीं था सो उसने अपने आगे वाले आदमी से पूछा, उसने अपने आगे वाले आदमी से पूछा।

यह खबर चलते चलते छज्जू तक पहुँची तो उसने कहा कि हॉ वहॉ सबके लिये काफी हलवा होगा। अब यह खबर वापस मोटे आदमी तक आयी।

कुछ देर तक तो वह चुप रहा पर फिर वह चुप नहीं रह सका। वह फिर बोला "छज्जू को ठीक ठीक बताना चाहिये कि वहॉ कितना हलवा होगा।

एक बार फिर यह सवाल ऊपर तक गया तो इस बार छज्जू ने कुछ झुँझलाते हुए जवाब दिया कि वहॉ हलवा काफी होगा लोग चिन्ता न करें। यह खबर फिर नीचे तक आयी और वह मोटा आदमी फिर कुछ देर चुप रहा।

पर वह फिर बहुत देर तक चुप नहीं रह सका। स्वर्ग की यात्रा लम्बी थी और खत्म होने पर ही नहीं आ रही थी। वह बहुत थक गया था और उसको अब भूख भी लग आयी थी। उसने फिर पूछा कि स्वर्ग में कितना हलवा खाया जा सकता था।

सवाल एक बार फिर ऊपर तक गया ओर जब तक वह छज्जू तक पहुँचा उसका धीरज छूट चुका था। उसने अपने दोनों हाथ दोनों तरफ फैला दिये।

वह चिल्ला कर कुछ बोलने ही वाला था कि उसके दोनों हाथों से हाथी की पूँछ छूट गयी और वह और उसके साथ के सब लोग नीचे गिरने शुरू हो गये।

वह मोटा आदमी सबसे पहले नीचे गिरा और उसके ऊपर गिरे दूसरे लोग। गिरने की धम धम की आवाज हुई फिर सब शान्त हो गया।

कुछ देर तक तो वे सब वहॉ पड़े रहे। फिर वे उठे अपने कपड़ों की धूल झाड़ी और उस मोटे आदमी पर उसके इतने सारे सवाल पूछने पर गुस्सा होते हुए अपने अपने घर चले गये।

यही हलवा खाने के सपने का अन्त था। और यह हमें बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि उसके बाद वह हाथी फिर कभी नहीं देखा गया और लोगों को स्वर्ग का हलबा फिर कभी नहीं मिला।

5 खान के लिये मिठाई[15]

यह लोक कथा भारत के देहली क्षेत्र के आस पास की लोक कथाओं से ली गयी है। यह बहुत पुरानी बात नहीं है जब **1947** से पहले भारत पाकिस्तान बंगला देश सब भारत ही थे।

भारत की पश्चिमी सीमा अफगानिस्तान से मिलती थी और दोनों देशों में व्यापारिक सम्बन्ध बहुत अच्छे थे। इनमें से एक चीज़ जो अफगानिस्तान से भारत बहुत आती थी वह थे सूखे फल और मेवा – खास करके सूखे फल जैसे किशमिश खूबानी आदि।

अफगानिस्तान के रहने वाले पठान कहलाते थे और वे वहुत सारे सूखे फल ले कर भारत आया करते थे। वे इधर जाड़ों में आते थे जब उनका अपना देश बरफ से ढका रहता था। वे यहॉ आ कर रहते थे और अपना माल बेचते थे।

जब जाड़ा खत्म हो जाता था तो वे अपने देश वापस चले जाते थो और यहॉ का माल ले जा कर अपने देश में बेच दे देते थे जैसे कपड़ा और मसाले।

क्योंकि देहली एक मुख्य व्यापारिक जगह थी सो वे लोग देहली ही ज़्यादा आते थे।

[15] A Sweet For Khan – a folktale from Delhi, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/a_sweet_khan_indian_folktale.htm

वैसे तो वे बहुत ही नरम दिल के लोग होते थे पर एक तो उनको गुस्सा वहुत जल्दी आता था और दूसरे वे पैसा पकड़ बहुत होते थे। यह कहानी एक ऐसे ही अफगानिस्तानी पठान की है।

अफगानिस्तान के कावुल शहर[16] में एक बार एक पठान सौदागर रहता था। हालॉकि उसका पूरा नाम खान हैदर खान था पर अफगानिस्तान के दूसरे लोगों की तरह से लोग उसको खान कह कर ही बुलाते थे।

काबुल के बाजार में खान की एक छोटी सी दूकान थी जहॉ वह मेवा बेचा करता था जैसे बादाम किशमिश सूखी खूबानी अंजीर आदि। सारी गरमी तो वह ये सूखे फल वहॉ बेचता था पर जाड़ा आने से पहले पहले वह अपनी दूकान वहॉ बन्द कर देता था।

फिर वह बहुत सारे सूखे फल बॉधता और उनको बेचने के लिये भारत की तरफ चल देता था। जाड़े भर वह देहली में रहता था और सड़कों पर चक्कर काट कर अपना सामान बेचा करता था।

वह अपने पैसे के मामले बहुत ही सावधान था और अपने सामान का बहुत अच्छा सौदा करता था। किसी की जानकारी में खान ने कभी एक पैसा भी बरबाद नहीं किया।

[16] Kabul is the capital of Afganistan.

खान छह फीट से भी ज़्यादा लम्बा था। हमेशा पगड़ी पहनता था और अपने सिर पर सुनहरे रंग के चॉद वाली[17] टोपी पहनता था। जिससे उसकी लम्बाई कुछ और वढ़ जाती थी।

वह ढीला ढाला सलवार कुरता पहनता था और उसके ऊपर कमर तक का एक कोट पहनता था। उसकी बड़ी बड़ी मूँछें थीं और उसकी लम्बी खुली दाढ़ी नीचे तक लटकती रहती। इस वेश में वह बहुत डरावना लगता था।

कुछ लोग उसको देख कर डरते भी थे खास करके छोटे छोटे बच्चे। पर फिर भी खान के कुछ दोस्त बन गये थे। उन कुछ दोस्तों में से एक था एक लाला[18] जो कपड़ा बेचा करता था।

जब भी खान लाला की दूकान के सामने से गुजरता तो लाला उसको बात करने के लिये बुला लेता। वे अक्सर चाय समोसा[19] साथ साथ खाया करते थे और उनको एक दूसरे का साथ भी अच्छा लगता था।

एक दिन लाला ने खान के लिये एक खास मिठाई मॅगवायी। वह पीला रंग लिये कत्थई रंग की मिठाई थी और गोल थी पर वह बीच में से आधी कटी हुई थी। वह इतनी सख्त थी कि उसमें उॅगली

[17] The cap whose top part was pf golden color.

[18] Lala means a merchant

[19] Samosa is a popular North Indian snack most commonly eaten with tea.

नहीं घुस सकती थी। पर लाला ने उसको तोड़ा और तोड़ कर खान को खाने के लिये दी।

जब खान ने उसको मुँह में रखा वह तो उसको खा कर बहुत खुश हो गया। उसने तो ऐसी कोई चीज़ इससे पहले कभी खायी ही नहीं थी।

उसने तुरन्त ही उसकी बहुत तारीफ करनी शुरू कर दी सो लाला ने उसको और एक टुकड़ा तोड़ कर दिया। खान ने उसकी भी बहुत तारीफ की तो लाला ने फिर उसको एक और टुकड़ा दिया और फिर एक और... ।

इस तरह से खान वह मिठाई खाता ही चला गया और उसकी तारीफ करता चला गया। जब वह मिठाई खा कर खान का पेट भर गया तो उसने लाला से उसका नाम पूछा। लाला ने उसका नाम बताया "सोन हलवा"।

खान ने अपनी ऑखें बन्द करके उस मिठाई के स्वाद का आनन्द लेते हुए कहा कि वह उसका नाम कभी नहीं भूलेगा।

खान ने लाला को उसकी मिठाई सोन हलवा के लिये कई बार धन्यवाद दिया और फिर बची हुई मिठाई की तरफ आखिरी बार नजर डालता हुआ वहॉ से चला गया।

पर वह वह मिठाई नहीं भूला। वह मिठाई थी ही इतनी स्वादिष्ट कि उसको भूलना आसान नहीं था। दिन रात वह मिठाई उसके दिमाग में घूमती रहती। यहॉ तक कि कभी कभी तो वह

उसके सपने में भी आती और उसकी उसको फिर से खाने की इच्छा होती।

अब खान को सोन हलवे का रंग उसकी शक्ल और साइज़ तो मालूम ही था पर उसको यह नहीं मालूम था कि वह उसको मिलेगी कहॉ। कि वह उसको कहॉ से खरीदे। उसने इस बारे में कभी लाला से भी बात नहीं की।

बस उसने अपनी एक आदत बना ली कि वह हर दूकान में झॉकता चलता कि शायद किसी दूकान में उसको सोन हलवा मिल जाये।

इस तरह से खान बहुत दिनों तक दूकानें झॉकता रहा। दूकानों में उसने बहुत सारी चीज़ें देखीं पर उसने सोन हलवा कहीं दिखायी नहीं दिया।

अब वह सोन हलवे की तरफ से कुछ नाउम्मीद सा होता जा रहा था कि एक दिन एक छोटी सी दूकान के सामने उसे वह मिल गया जो वह ढूँढ रहा था।

करीब करीब बीस टुकड़े जो उसको सोन हलवा जैसे लगे वह एक लकड़ी की थाली में रखे हुए थे। हालॉकि वह एक बहुत ही गन्दी सी दिखायी देने वाली दूकान थी पर फिर भी कम से कम उसकी पसन्द की मिठाई तो बेच रही थी।

मिठाई के एक तरफ झाड़ुओं का एक ढेर रखा हुआ था और दूसरी तरफ रस्सी के गोले रखे हुए थे। एक दो चूहा पकड़ने वाले जाल भी रखे हुए थे।

पर खान को इस बात से क्या मतलब था। उसने सोन हलवे का एक आधा गोला उठाया और उसे खरीदने के लिये दूकान के अन्दर पहुँच गया। उसने उसे चार आने[20] का खरीद लिया।

उसे ले कर खान जल्दी जल्दी चला। जितनी लम्बी उसकी टाँगें थीं उस हिसाब से तो वह बहुत जल्दी चल रहा था। चलते चलते वह बाजार के दूसरे कोने पर एक खुली जगह में आ गया।

वहाँ उस खुली जगह के चारों तरफ एक नीची दीवार बनी हुई थी सो आ कर वह उस नीची दीवार पर बैठ गया। खुश खुश उसने वह आधा गोला उठाया और उसमें अपने दाँत गड़ाये पर उसी समय उसने उसको थूक भी दिया।

यह सोन हलवा तो बहुत ही खराब था। खान ने कुछ पल इन्तजार किया और फिर उसको दोबारा चखा पर फिर थूक दिया। वह अभी भी उसको बहुत ही खराब लग रहा था।

बदकिस्मती से वह तो कुछ ज़्यादा ही खराब लग रहा था। खान यह सोच कर परेशान था कि लाला की दूकान पर तो यह मिठाई बहुत ही स्वादिष्ट लग रही थी फिर यहाँ यह इतनी खराब क्यों लग रही है।

[20] Before 1957 an Indian Rupee was divided in 16 Anna. Later in 1957 it was decimalized.

अचानक इस सारे मामले पर खान को बहुत गुस्सा आ गया। पर उसने जब चार आने खर्च किये थे तो उसको वे पैसे तो वसूल करने ही थे। वह अपने पैसे बरबाद नहीं करना चाहता था।

सो वह उस दीवार पर मजबूती से बैठ गया और उस हलवे का हर कौर अच्छी तरह से चबा कर खाने लगा हालॉकि उसका हर कौर उसको बहुत ही खराब लग रहा था।

तभी वहॉ से एक आदमी गुजरा। उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि खान बहुत बुरे बुरे मुँह बना कर कुछ खाता जा रहा था जिससे उसके नाक और मुँह से सफेद बुलबुले निकल रहे थे।

यह देख कर वह आदमी खान पर चिल्लाया — "अरे यह तुम क्या खा रहे हो। यह तो साबुन है। तुम यह साबुन क्यों खा रहे हो।"

उसके इस तरह से बीच में टोकने पर खान उस पर चिल्ला पड़ा। उसने उस आदमी से कहा कि वह गलत था। उसने उस चीज़ को खरीदने के लिये चार आने खर्च किये थे और वह अपने पैसे का पूरा पूरा इस्तेमाल करना चाहता था।

वह उनको किसी भी हालत में बरबाद नहीं कर सकता था इसलिये उसने जो चीज़ खरीदी थी वह तो उसको खानी ही थी।

आखिर खान ने धीरे धीरे करके वह सारा साबुन खा लिया। साबुन खा कर वह कई दिनों तक बीमार पड़ा रहा पर उसको यह सन्तोष था कि उसके चार आने बेकार नहीं गये थे।

भारत में इस कहानी को लोग "खान क्या खाता अपना पैसा।" के नाम से सुनाते हैं।

6 बेवकूफ मगर[21]

बेवकूफ मगर की यह लोक कथा भारत के गुजरात प्रदेश में रहने वालों में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात ही कि गुजरात की एक नदी के किनारे एक जामुन का पेड़ था जिस पर एक बन्दर रहता था। वह बहुत ही खुशमिजाज और दयालु बन्दर था जिसको जामुन खाने बहुत अच्छे लगते थे और जो उस पेड़ पर बहुतायत से होते भी थे।

एक दिन एक भूखा मगर बन्दर के पास आया और बोला — "क्या मैं भी तुम्हारे इस पेड़ के मीठे मीठे फल खा सकता हूँ?"

बन्दर बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं।" और तुरन्त ही कुछ जामुन तोड़ कर उसने भूखे मगर की तरफ फेंक दीं।

मगर ने जब वे जामुन खायीं तो उसको वे बहुत अच्छी लगीं। इसलिये वह अगले दिन उनको खाने के लिये फिर से बन्दर के पास लौटा और उससे फिर से वे जामुन

[21] The Foolish Crocodile – a folktale from Gujarat, India – Adapted from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/359/preview

खाने के लिये माँगे। बन्दर ने फिर से उसे वे फल खाने के लिये फेंक दिये।

अब क्या था मगर रोज उन फलों को खाने के लिये बन्दर के पास आने लगा।

एक दिन मगर ने बन्दर से पूछा — "बन्दर भाई तुम्हारे ये फल तो बहुत अच्छे हैं क्या इनमें से कुछ फल मैं अपने घर अपनी पत्नी के लिये भी ले जा सकता हूँ?"

अब तक क्योंकि बन्दर और मगर अच्छे दोस्त हो गये थे तो बन्दर ने मगर को अपने घर अपनी पत्नी के लिये भी कुछ फल ले जाने के लिये दे दिये। मगर ने बन्दर से वे मीठे फल ले कर उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वे फल ले कर अपने घर चला गया।

पर उसकी पत्नी कोई बहुत अच्छी मगर नहीं थी। वह एक जादूगरनी[22] मगर थी। वह हमेशा ही जंगल के दूसरे जानवरों के लिये कुछ न कुछ जाल फेंकने का ताना बाना बुनती रहती थी।

मगर की पत्नी ने अपने पति से पूछा कि उसको इतने मीठे फल कहाँ से मिले।

मगर ने उसको बताया — "मेरा एक बहुत ही प्यारा दोस्त है, एक बन्दर। वह इस नदी के दूसरी ओर एक जामुन के पेड़ पर रहता है वह मुझे यह फल रोज खिलाता है।"

[22] Translated for the word "Witch"

अब मगर की पत्नी तो एक जादूगरनी थी और वह भी बहुत बुरी और नीच जादूगरनी। उसने एक पल को तो सोचा फिर वह बोली — "अगर बन्दर जामुन के पेड़ पर रहता है और ऐसे मीठे मीठे फल सारा दिन खाता है तो ज़रा सोचो कि उसका कलेजा कितना मीठा होगा। मुझे खाने के लिये इस बन्दर का कलेजा चाहिये और वह मुझे तुम ला कर दोगे।"

पति मगर बोला — "मैं तो ऐसा सोच भी नहीं सकता। मैंने तुम्हें अभी बताया कि यह बन्दर मेरा दोस्त है और मैं तुम्हें उसका कलेजा खाने नहीं दे सकता।"

चालाक मगर पत्नी ने फिर कुछ पल सोचा और फिर बोली — "मुझे तो यह विश्वास ही नहीं होता कि ये फल तुम किसी बन्दर से ले कर आये हो। मुझे तो लगता है कि तुम मेरे पीछे किसी और सुन्दर मादा मगर के चक्कर में पड़ गये हो। तुम मुझे धोखा दे रहे हो मुझे मालूम है।"

पति मगर ने उसको बहुत समझाया कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया है और अपनी पत्नी के इलजाम लगाने पर बहुत दुखी हो गया।

उसने सोचा कि अब उसकी भलाई इसी में है कि वह बन्दर और जामुन के पेड़ से अब दूर ही रहे जब तक उसकी पत्नी ठीक हो जाये और वह अपने इस नीच प्लान को भूल जाये।

धीरे धीरे हफ्तों गुजर गये और मगर पत्नी ने अपने पति पर इलजाम लगाना नहीं छोड़ा कि वह किसी दूसरी मादा मगर से मिलता था हालॉकि वह जानती थी वह उस पर झूठा इलजाम लगा रही है।

वह कहती — "मै जानती हूँ कि अगर वह कोई बन्दर होता जो जामुन के पेड़ पर रहता तो तुम मुझे जरूर ही उसे पकड़ कर ला देते और मुझे उसका कलेजा खिला देते। अगर तुम मुझे प्यार करते होते तो।"

आखिर पत्नी मगर ने पति मगर को इस बात के लिये राजी कर ही लिया कि वह बन्दर के पास जाये और उसको पत्नी मगर के पास ले कर आये ताकि वह उसका कलेजा खा सके।

सो अगली शाम मगर जामुन के पेड़ के पास पहुँचा। वहॉ पहुँच कर उसको बहुत ही खराब लग रहा था। मगर को नीचे आया देख कर बन्दर ने पूछा — "अरे मगर भाई तुम इतने हफ्तों से कहॉ थे। मुझे तो इतने दिनों तक तुम्हारी बहुत याद आती रही।"

जैसा मगर कै पत्नी ने उसको सिखाया था मगर ने उसको वही जवाब दिया — "असल में मेरी पत्नी तुमको खाने पर बुलाना चाह रही थी ताकि वह तुम्हारे दिये जामुन के फलों का धन्यवाद कर सके पर हम लोग नदी के दूसरी तरफ रहते हैं।

मैं अपनी पत्नी से यही बहस करता रहा कि तुम तो पानी में तैर नहीं सकते अगर तुम्हें नदी पार करनी पड़ी तो तुम तो डूब जाओगे

और मैं यकीनन यह नहीं चाहता कि तुम पानी में डूबो। तो तुमको मैं अपने घर कैसे ले जाऊँ।"

बन्दर बोला — "पर तुम मुझे अपनी पीठ पर बिठा कर नदी पार करा सकते हो। इस तरह से मैं तुम्हारे घर भी आ जाऊँगा और तुम्हारी पत्नी से भी मिल लूँगा।"

मगर इस बात पर राजी तो हो गया पर वह यह सोच सोच कर बहुत दुखी था कि वह अपने दोस्त से धोखा कर रहा था।

उधर बन्दर को इस बात का कुछ पता ही नहीं था कि उसका क्या होने वाला है वह खुशी खुशी पेड़ से कूदा और मगर की पीठ पर जा कर बैठ गया। मगर पानी में खिसक गया और मगर नदी पार अपने घर की तरफ चल दिया।

जब मगर पानी में तैर रहा था तो उसको इतना खराब लगा कि उसने सोचा कि वह अपने दोस्त को इतना बड़ा धोखा नहीं दे सकता वह उसको सच बता ही देता है।

सो वह बोला — "बन्दर भाई मैंने तुमसे जो कुछ भी कहा था वह सच नहीं बोला था। मेरी पत्नी एक बहुत ही बुरी जादूगरनी है और मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि वह तुम्हारा कलेजा खाना चाहती है। तुमको उसने खाना खिलाने के लिये नहीं बल्कि तुम्हारा कलेजा खाने के लिये बुलाया है।"

यह सुन कर बन्दर पहले तो डर गया पर वह एक होशियार बन्दर था सो उसका दिमाग तेज़ी से चलने लगा। कुछ पल तो उसने

सोच पर फिर बोला — "पर मगर भाई यह बात तुम्हें मुझे पहले बतानी थी क्योंकि मैं तो अपना कलेजा जामुन के पेड़ पर ही छोड़ आया हूँ।

अगर तुम्हारी पत्नी को मेरा कलेजा ही खाना है तो हमको उसे लाने के लिये उस पेड़ पर वापस जाना पड़ेगा।"

यह सुन कर तो मगर को बहुत आश्चर्य हुआ कि बन्दर अपना कलेजा उसकी पत्नी को इतनी जल्दी देने के लिये तैयार हो गया था। पर जब बन्दर के पास उसका कलेजा था ही नहीं और वह पेड़ पर रखा था तो वह क्या करता वह तुरन्त ही पेड़ की तरफ लौट पड़ा।

जैसे ही वे जामुन के पेड़ के पास पहुँचे बन्दर जितनी तेज़ी से हो सकता था उतनी जल्दी से मगर की पीठ से कूद कर अपने पेड़ पर चढ़ गया और उसकी सबसे ऊँची शाख पर जा कर बैठ गया।

जब उसे यकीन हो गया कि वह अब अपने दोस्त से सुरक्षित था तब उसने मगर की तरफ देखा और बोला — "तुम तो बहुत ही बेवकूफ मगर हो। अरे मेरा कलेजा तो मेरी छाती में धड़क रहा है और यह तो वहाँ हमेशा से ही धड़कता रहा है।

तुम्हारी बुरी नीच पत्नी को तो अब वह कभी खाने को नहीं मिलेगा। और अब हम तुम भी कभी नहीं मिलेंगे क्योंकि तुमने मुझे धोखा दिया है। बस अब तुम यहाँ से चले जाओ।"

यह सुन कर मगर अपने घर वापस चल दिया। जब तक वह अपने घर पहुँचा तब तक मगर को अपने किये पर सोचने के लिये काफी समय मिल गया। उसको अपने दोस्त को धोखा देने का बहुत दुख था। उसको अपने किये का अफसोस भी बहुत था।

जैसे ही वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने पूछा कि बन्दर कहाँ है। मगर बोला — "मुझे बहुत अफसोस है कि बन्दर ने मुझे धोखा दे दिया और अब वह अपने पेड़ से नीचे कभी नहीं आयेगा।"

पर मगर की पत्नी अपने पति की कहानी से सन्तुष्ट नहीं थी उसने अपने पति को अपने घर से बाहर निकाल दिया और कहा कि जब तक वह ज़िन्दा है वह उस घर में कदम भी न रखे।

मगर ने अपनी पत्नी की तरफ से मुँह फेरा और अपनी उन सब चीज़ों को भूल कर जिन्हें वह कभी जानता था नदी के नीचे की तरफ तैरना शुरू कर दिया।

वह बहुत दुखी था और अकेला था। उसको यही पता नहीं था कि वह कहाँ जा रहा था पर उसको इतना जरूर पता था कि उसने उसी पल अपनी किस्मत को ताला लगा दिया था जब उसने अपने दोस्त को धोखा दिया था।

वह उस अँधेरी उदास रात में तैरते हुए सोचता जा रहा था "मैं इसी का अधिकारी हूँ मुझे यही मिलना चाहिये था।

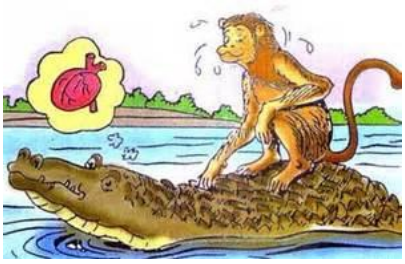

7 भूत जो भाग गया[23]

भूत की यह लोक कथा हिमाचल प्रदेश के कॉगड़ा क्षेत्र में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि कॉगड़ा जिले के एक गॉव में एक नौजवान रहता था। उसका नाम था धनियॉ। उसकी दाल मसाले की दूकान थी जिसकी आमदनी से वह और उसकी पत्नी आराम से रह लेते थे। वह बहुत ही सीधा सादा था।

वह इतना सीधा था कि उसको रोजमर्रा की परेशानियों को भी हल करने में बहुत मुश्किल होती थी। और फिर जब कभी ऐसा होता तो उन परेशानियों का हल ढूँढने के लिये वह अपने दोस्त कुलफी राम के पास भागा जाता।

कुलफी राम एक हाथ देखने वाला था। वह रोज एक आम के पेड़ के नीचे बैठता था और वहॉ लोगों के आने का इन्तजार करता जो उसके पास अपना भविष्य पूछने के लिये अपना हाथ दिखाने के लिये आते थे।

एक दिन जब कुलफी राम इस तरह से आम के पेड़ के नीचे बैठा अपने ग्राहकों का इन्तजार कर रहा था तो धनियॉ उसके पास दौड़ता हुआ आया। उस समय वह और दिनों से कुछ ज़्यादा ही

[23] The Ghost That Got Away – a folktale from HP, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/folktale_himachal_pradesh_indian_folktale.htm

परेशान लग रहा था। उसको ऐसे आते देख कर कुलफी राम हॅस पड़ा। उसने उससे पूछा — "आज तुम्हारे ऊपर ऐसा कौन सा कहर आ पड़ा कि तुम इतने परेशान लग रहे हो?"

धनियॉ बोला — "दोस्त मैं वाकई बहुत परेशान हूॅ क्योंकि मुझे अपनी ससुराल जाना है।"

यह सुन कर तो कुलफी राम और ज़ोर से हॅस पड़ा और बोला — "तो इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है तुमको तो खुश होना चाहिये। क्योंकि वहॉ जा कर तो तुम्हारी बहुत खातिरदारी होने वाली है।

वे लोग तुमको बहुत अच्छी तरीके से रखेंगे। तुम्हारी हर जरूरत का खयाल रखने के लिये वे इधर से उधर भागे फिरेंगे।"

अब तक धनियॉ का धीरज छूट गया था। उसने कहा कि वह वहॉ जाना नहीं चाहता था क्योंकि वहॉ जाते में उसको डर लगता था।

अब क्योंकि उसकी पत्नी उसके साथ तो जा नहीं रही थी तो उसको वहॉ अकेले ही जाना था। और उसको तो यह भी नहीं पता था कि वहॉ जा कर वह उनसे बात कैसे करेगा।

यह सुन कर कुलफी राम ने पहले तो अपना हाथ धनियॉ के हाथ पर ज़ोर से मारा और फिर थपथपाया फिर बोला — "तुम बिल्कुल चिन्ता न करो मैं तुम्हें सब बता दूॅगा कि वहॉ जा कर तुम्हें क्या कहना है क्या करना है।"

धनियॉ को अभी भी अपने ऊपर भरोसा नहीं था सो वह बोला कि अगर वह खुद उसके साथ चले तो बहुत अच्छा रहेगा। कुलफी राम को तो यह सुन कर बहुत अच्छा लगा और वे दोनों अगले दिन धनिया की ससुराल चल दिये।

रास्ते में कुलफी राम ने धनियॉ को बताया कि वहॉ जा कर उसको दो बातों का खयाल रखना है। पहली बात तो यह कि उसको वहॉ जा कर बहुत ज़्यादा बात नहीं करनी है। दूसरे वहॉ उसको बहुत ज़्यादा खाना नहीं है।

कुछ घंटे बाद वे दोनों धनियॉ की ससुराल आ पहुँचे। धनियॉ की पत्नी का पूरा परिवार उनकी अगवानी के लिये बाहर आ गया। धनियॉ की सास ने धनियॉ का हाथ जोड़ कर स्वागत किया।

धनियॉ का चेहरा धीरे धीरे लाल पड़ता जा रहा था पर कुलफी राम ने उसको बहुत बोलने से मना कर रखा था इसलिये उसने भी अपनी सास के स्वागत का जवाब केवल हाथ जोड़ कर ही दिया। वह बोला कुछ नहीं।

धनियॉ की बजाय कुलफी राम बोला कि धनियॉ इस लम्बी यात्रा से कुछ थक गया था सो उसको रात भर की नींद की जरूरत है।

सो तुरन्त ही वे रात के खाने के लिये ले जाये गये। वहॉ उनको नीचे फर्श पर बिछे तिनकों के एक मोटे आसन पर बिठाया गया और फिर उनको खाना परोसा गया।

खाना देख कर तो धनियॉ की ऑखें फटी की फटी रह गयीं। खास करके लाल लाल करारी पूरियॉ देख कर। वे पूरियॉ तो उसने दो पूरियॉ एक ही बार में खा लीं पर फिर उसको अपने दोस्त कुलफी राम की सलाह याद आयी तो उसको तो उसकी सलाह माननी ही थी।

सो दूसरी पूरी खाने के बाद जो कुछ भी उसको खाने के लिये दिया गया उसने हर वह चीज़ खाने के लिये मना कर दिया। हालॉकि खाने को मना करने का उसका मन बिल्कुल नहीं था फिर भी वह हर खाने की चीज़ को मना करता ही रहा।

उधर कुलफी राम बराबर खाता ही रहा और अपना हर कौर मजे ले ले कर खाता रहा।

खाना खाने के बाद दोनों दोस्तों को एक दूसरे कमरे में ले जाया गया जहॉ दो बिस्तर लगे हुए थे। इन बिस्तरों के गद्दे बहुत ही मुलायम थे और इतने आरामदेह थे कि वे दोनों उन पर लेटते ही सो गये।

पर आधी रात को धनियॉ की ऑख खुल गयी। उसके पेट में भूख के मारे चूहे कूद रहे थे। वह बहुत भूखा था।

धनियॉ कुछ देर तक तो इस आशा में लेटा रहा कि शायद उसको नींद आ जाये पर कुछ देर बाद ही उसको पता चल गया कि इतनी भूख में वह सो नहीं पायेगा। जैसे जैसे समय गुजरता जा रहा था उसकी भूख बढ़ती जा रही थी।

आखिर वह उसको सह नहीं सका तो उसने अपने दोस्त को हाथ से हिला कर जगाया।

कुलफी राम कुछ नाराज सा तो हुआ पर उसने बिस्तर से उठ कर दरवाजा खोल कर इधर उधर देखा। उनके कमरे से घर का ऑगन दिखायी देता था।

ऑगन के उस पार एक कमरा था जो शायद घर का भंडारघर था क्योंकि उन लोगों ने घर की मालकिन को उस कमरे मे जा कर घी का डिब्बा लाते हुए देखा था। इस भंडारघर में खाने के लिये जरूर ही कुछ रखा होगा। पर इस कमरे के दरवाजे पर तो ताला भी लगा था।

कुलफी राम ने कुछ पल सोचा और बोला कि जब तक हम तुम्हारी सास को नहीं जगायेंगे तब तक रात के इस समय में तो हमें कोई खाना नहीं मिल सकता। पर धनियॉ ने तो शरम के मारे उसके पास जाने से मना कर दिया।

इस पर कुलफी राम ने कहा कि फिर तो भंडारघर में जाना ही पड़ेगा और वहीं कुछ देखना पड़ेगा। अगर उनकी किस्मत अच्छी होगी तो शायद वहॉ उनको कुछ खाने को मिल जाये।

धनियॉ उस भंडारघर के एक रोशनदान से हो कर भंडारघर में घुसा। उसने एक रस्सी अपनी कमर में बॉधी कुलफी राम के कन्धे पर चढ़ा और रोशनदान से हो कर भंडारघर में उतर गया। कुलफी राम बाहर ही खड़ा रहा।

प्लान यह था कि जब धनियॉ पेट भर कर खा लेता तो कुलफी राम उसकी रस्सी पकड़ कर खींच लेता। इस प्लान के अनुसार धनिया भंडारघर में पहुँच गया।

पहले तो उसको वहॉ अँधेरे की वजह से कुछ दिखायी नहीं दिया। पर जब वह अँधेरे में कुछ देखने लायक हुआ तो उसको वहॉ कुछ शक्लें दिखायी दीं जैसे टीन के डिब्बे बक्से बोतलें बालटियॉ आदि।

वहॉ चावल और गेंहू के बोरे रखे थे पर खाने के लिये कुछ नहीं था। तभी धनियॉ को छत से लटकता मिट्टी का एक घड़ा दिखायी दे गया। उसको देख कर वह खुश हो गया शायद उसमें उसके खाने लायक कोई चीज़ हो।

सो धनियॉ एक बक्से पर खड़ा हो गया और अपना हाथ जितना ऊँचा ले जा सकता था ले गया पर फिर भी मुश्किल से वह उस घड़े की तली को ही छू सका।

फिर उसने कोने में खड़ी एक डंडी उठा ली और उसे उस घड़े पर मारी। उसकी मार से घड़े में दरार पड़ गयी और उसमें से किसी चीज़ की पतली सी धारा निकल पड़ी।

धनियॉ ने उस धारा से जो कुछ भी गिर रहा था खाने के लिये तुरन्त ही अपना मुँह खोल दिया। उसने उसका बड़ा सा घूँट सटका तो उसे पता चला कि वह तो शहद था।

कुछ मिनट तक धनियॉ उस घड़े के नीचे खड़ा रहा और शहद पीता रहा। जब उसने पेट भर कर शहद पी लिया तो अचानक ही उस घड़े का एक बड़ा सा टुकड़ा टूट गया और वह पतली सी धारा एक बहुत ही मोटी सी धारा में बदल गयी।

इससे पहले कि धनियॉ उस घड़े के नीचे से हटता उस घड़े का सारा शहद उसके ऊपर बिखर गया था। वह उसके बालों पर बिखर गया था। वह उसकी ऑखों और कानों पर से होता हुआ उसके कुरते तक चला गया था।

वह वहॉ से हटना चाहता था पर वह तो उसके पैरों के नीचे भी था। सो वह फर्श पर चिपक गया था। वह अपने दोस्त का नाम ले कर चिल्लाया तो कुलफी राम बोला कि वह चिन्ता न करे वह उसको बाहर निकाल लेगा।

पर यह कहना आसान था करना मुश्किल था। कुलफी राम एक पतला दुबला सा आदमी था जबकि धनियॉ इतना हल्का नहीं था। इसके अलावा धनियॉ के पैर शहद की वजह से फर्श पर चिपके हुए थे।

कुलफी राम ने उसको अपनी पूरी ताकत से खींचा पर वह धनियॉ के केवल पैर ही फर्श से उठा सका और वह भी केवल एकाध फुट। बस इतने में ही उसकी सॉस फूल गयी और धनियॉ धम्म की आवाज के साथ नीचे गिर पड़ा।

इस शोर से धनियॉ के ससुर की ऑख खुल गयी। वह धनियॉ की सास को ले कर भागा हुआ भंडारघर की तरफ आया।

उन दोनों को आते देखते ही कुलफी राम का तो दिल डूबने लगा। पर वह बहुत जल्दी सोचता था और जल्दी जवाब देता था। उसने अपनी उस हालत बचाने के लिये उनको एक कहानी बना कर सुनायी।

उसने कहा कि करीब पॉच साल से एक भूत मेरे पीछे पड़ा है। वह मेरे साथ तीर्थयात्रा पर जाना चाहता था पर एक समझदार आदमी होने के नाते मैंने उसको मना कर दिया।

पर उस भूत ने मेरा इस घर तक पीछा किया और अब मैं उसको यहॉ से बाहर निकालने के लिये अकेला रहना चाहता हूॅ। नहीं तो अगर उस भूत को उन दोनों में से कोई भी पसन्द आ गया तो फिर वह यह घर छोड़ कर कभी नहीं जायेगा।

धनियॉ की सास डर गयी और उसने कुलफी राम को तुरन्त ही भंडारघर की चाभी दे दी और दोनों तुरन्त ही अपने कमरे में वापस चले गये।

कुलफी राम ने भंडारघर का दरवाजा खोला और धनियॉ को बाहर आने के लिये कहा।

शहद में डूबा हुआ सारा चिपचिपा और कुछ गुस्सा सा धनियॉ बाहर आया और एक और कमरे में यह सोचते हुए चला गया कि वह उसका कमरा था। पर वह उसका कमरा नहीं था उसमें तो रुई

भरी हुई थी जो उस परिवार के लिये रजाई बनाने के काम आने वाली थी।

बस जैसे ही वह उस कमरे के अन्दर गया वहॉ रखी हुई रुई उसके शहद लिपटे शरीर पर चिपक गयी। अब वह सचमुच में ही एक भूत जैसा लगने लगा।

उसके सास ससुर अपने कमरे के दरवाजे की झिरी में से यह सब तमाशा देख रहे थे। जब उन्होंने धनियॉ को रुई लिपटे देखा तो दोनों ने डर के मारे आपस में एक दूसरे को पकड़ लिया और अपना सिर छिपा कर वहीं खड़े रह गये। हिल भी न सके।

सो अब सब कुछ साफ था। कुलफी राम धनियॉ को पीछे वाले कुॅए पर ले गया। धनियॉ ठीक से नहाया धोया अपने रुई वाले कपड़े मिट्टी में गाड़ दिये और अपने कमरे में चला गया।

अगले दिन जब वह सो कर उठा तो वह वैसा ही साफ सुथरा और भोला भाला लग रहा था जैसा कि वह पहले दिन जब वहॉ आया था तब लग रहा था।

एक बार फिर सुबह के खाने में उसने थोड़ा सा ही खाया पर लौटते समय गॉव के बाहर वाले किनारे पर की दूकान पर दोनों ने पेट भर कर दूध जलेबी खायीं। और फिर दोनों दोस्त हॅसते हुए अपने अपने घर आ गये।

8 दो बेटियॉ[24]

दो बेटियॉ लोक कथा भारत के केरल प्रदेश में रहने वाली कुरवा जनजाति में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात ही कि केरल प्रदेश के एक गॉव में एक बूढ़ा रहता था। उसका घर एक पत्तों से छवायी हुई झोंपड़ी थी जिसके चारों तरफ नारियल के पेड़ लगे थे।

वह कुरवा जनजाति का था और अपनी जाति के दूसरे लोगों की तरह से वह एक गरीब और सीधा सादा आदमी था। इस आदमी के दो बेटियॉ थीं जो साधारण परिवारों में ब्याही थीं।

उसका बड़ा दामाद तो गरीब ही रहा पर उसके छोटे दामाद ने अपना एक बिजनैस शुरू कर दिया था जो जल्दी ही फलने फूलने लगा और वह कुछ ही दिनों में अमीर भी हो गया।

पर बूढ़े कुरवा और उसकी पत्नी को इस बात का पता नहीं था। वे लोग अपनी एक छोटी सी झोंपड़ी में रहते थे बाहर की दुनियॉ से बेखबर। वे अपना खेत जोतते थे और रोज दो वक्त चावल का सादा सा खाना खाते थे।

उनका बिस्तर भी बोरी का एक टुकड़ा होता था जिसको वे झोंपड़ी के फर्श पर फैला कर उस पर सो जाते थे। पर वे अपने इस

[24] The Two Daughters – a folktale from Kerala, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/30/the_two_daughters_indian_folktale.htm

रहने सहने से सन्तुष्ट थे। दुनियॉ के पैसे से उनको कोई मतलब नहीं था।

एक दिन कुरवा की पत्नी ने कहा — "हमने अपनी बेटियों की शादी तो कर दी पर हमको उनके बारे में कुछ पता नहीं है कि वे कैसे रह रही हैं।"

वे अपने माता पिता को देखने के लिये भी एक साल से ज़्यादा से नहीं आयी थीं। सो मॉ ने पति से कहा कि उसको अपनी बेटियों को देखने के लिये जाना चाहिये।

बूढ़ा कुरवा यह सुनते ही राजी हो गया और वह अगले दिन सुबह सवेरे ही बेटी के गॉव चल पड़ा। उसके पास ले जाने के लिये कुछ था ही नहीं। बस एक छाता था और घर के पेड़ों पर लगे हुए कुछ प्लान्टेन थे।

उसकी बड़ी बेटी का गॉव उसके घर के ज़्यादा पास था केवल आधा दिन के चलने की दूरी पर। सो उसने पहले वहीं जाने का विचार किया।

कुरवा सुबह चल कर अपनी बेटी के घर दोपहर को पहुॅच गया। उसने जा कर देखा कि वह तो उसी की जैसी झोंपड़ी में रह रही है। उसकी झोंपड़ी की छत भी पत्तों से छवाई हुई है। और वह छत उस झोंपड़ी के दरवाजे के बाहर तक आ रही है जिससे एक बरामदा सा बन गया है। इसी बरामदे में वह अपना खाना बनाती है।

जब कुरवा उसके घर पहुँचा तो वहाँ आग पर एक बरतन में चावल उबल रहे थे। और उसकी बड़ी बेटी वहीं बैठी बैठी एक काशीफल काट रही थी जो उसकी झोंपड़ी के पीछे की तरफ लगी बेल पर से तोड़ा गया था।

उसने अपने पिता का बड़े प्यार से स्वागत किया। वे दोनों वहीं बरामदे में बैठ गये और दोनों ने चावल का खाना नमक काशीफल की सब्जी और भुनी हुई लाल मिर्च से खाया।

बूढ़े कुरवा ने गाँव के तालाब पर अपने हाथ मुँह धोये और फिर आराम से झोंपड़ी पर बिछी हुई एक बोरी पर आ कर सो गया।

अपनी बड़ी बेटी का घर इसको इतना अपना जैसा लगा कि वहाँ उसको बहुत अच्छा लगा और वहाँ उसने बड़ी शान्ति महसूस की।

अगली सुबह कुरवा वहाँ से चल दिया और दोपहर तक घर आ गया। कुरवा की पत्नी उसका बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रही थी। कुरवा ने उसको बताया कि उनकी बड़ी बेटी अपने घर में बहुत खुश थी। वह बहुत खुशकिस्मत थी कि उसको इतना अच्छा घर मिला था।

फिर वे सारा दिन अपनी बड़ी बेटी की खुशकिस्मती के बारे में ही बात करते रहे।

कुछ दिन बीत गये कि कुरवा की पत्नी ने कुरवा को अपनी छोटी बेटी के घर जाने के लिये कहा और पता करने के लिये कहा कि वह अपने घर में खुश है नहीं या कोई चीज़ उसको परेशान तो नहीं कर रही।

एक बार फिर कुरवा अपनी बेटी के घर जाने के लिये तैयार हो गया। अगले दिन सुबह ही कुरवा ने अपना छाता उठाया और घर के पेड़ों के कुछ नारियल लिये और अपेनी छोटी बेटी के घर रवाना हो गया।

छोटी बेटी के घर पहुँचते पहुँचते उसको शाम हो गयी। वहाँ जा कर उसने अपने दामाद का नाम ले कर उसके घर का पता पूछा तो लोगों ने उसको एक शानदार दिखायी देने वाले दुमंजिला मकान की तरफ इशारा कर दिया जिसमें लोहे का दरवाजा लगा हुआ था।

कुरवा ने तो उसको देखते ही अपना सिर हिलाया क्योंकि वह तो यह विश्वास ही नहीं कर सका कि वह मकान उसकी बेटी का हो सकता था। पर वह मकान तो उसकी बेटी का ही था।

अपने पिता को आया देख कर वह तुरन्त घर में से बाहर निकल कर आयी और उसका प्रेम से स्वागत किया। उसने उसको अन्दर ले जा कर एक कुरसी पर बिठाया।

एक गद्दी उसकी कुरसी पर उसके नीचे रखी थी दूसरी गद्दी उसके पीठ के पीछे रखी थी। क्योंकि उसने पहले कभी गद्दियाँ

इस्तेमाल नहीं की थीं सो उस कुरसी पर बैठ कर उसको बहुत ही अजीब सा लग रहा था। उसने वे दोनों गद्दियॉ निकाल दीं।

जल्दी ही शाम के खाने का समय हो गया। कुरवा तो खाना खाने के लिये जमीन पर बैठ कर और प्लान्टेन[25] के पत्ते पर खाना खा कर खुश रहता।

पर वहॉ तो उसके लिये एक और कुरसी उसका इन्तजार कर रही थी। और इससे भी बुरी बात तो यह थी कि खाना मेज पर लगाया जा रहा था।

वहॉ कोई प्लान्टेन का पत्ता नहीं था बल्कि वहॉ तो चमकती हुई स्टील की थालियॉ थीं जिनमें चमकता हुआ सफेद चावल भरा हुआ था। साथ में गरम गरम भाप उठते हुए खाने के कई कटोरे थे।

यह सब देख कर तो कुरवा की ऑखें चौंधिया गयीं। उसने एक हरी मिर्च मॉगी और मछली का भी केवल एक ही टुकड़ा लिया और चावल के ऊपर थोड़ा सा नमक छिड़क कर अपना खाना शुरू कर दिया।

[25] Plantain is a banana like fruit which is grown and eaten in tropical areas. It is different from banana in size, that it is bigger than that – see its picture above, but its tree is similar to a banana tree.

पर उसकी बेटी और दामाद उससे और खाना लेने के लिये जिद करते रहे। उसने उस एक खाने में इतना खाना और खाया जितना कि वह दो दिनों में खाता।

यह खाना बहुत अच्छा था और मसालेदार था। इसको खा कर वह अपने अन्दर कुछ बेचैनी महसूस करने लगा क्योंकि यह खाना वह कुछ ज़्यादा भी खा गया था।

कुरवा अपनी कुरसी से उठ गया और उसकी बेटी उसको उसके सोने वाले कमरे तक ले गयी। उस कमरे के बीचोबीच एक पलंग पड़ा हुआ था। इस पलंग पर एक मसहरी[26] लगी हुई थी जो चार लकड़ी के डंडों से बॅधी हुई थी।

कुरवा को लगा कि वह उस मसहरी के ऊपर सोयेगा। लकड़ी के डंडों पर चढ़ना तो एक आदमी के लिये कोई मुश्किल काम नहीं था क्योंकि अपनी सारी ज़िन्दगी तो उसने नारियल के पेड़ों पर चढ़ने में बितायी थी। पर जब वह मसहरी के ऊपर लेटा तो मसहरी तो नीचे गिर गयी।

उसको तो कोई चोट नहीं आयी पर उसके गिरने से जो आवाज हुई उससे सारा घर भाग कर उसके कमरे में आ गया। लोगों ने किसी तरह से अपनी हॅसी दबायी। पर कुरवा ने उस पलंग पर फिर सोने की बहुत कोशिश की पर वह वहॉ नहीं सो पाया। बस या तो वह फर्श पर सोता या फिर कहीं नहीं।

[26] Translated for the word “Mosquito net”. It is used to keep off the mosquitoes.

अगले दिन सुबह बेचारा कुरवा अपने पिछले दिन की घटना से सँभल चुका था। उसकी बेटी उसके कमरे में आयी और उसके लिये उसके दाँत साफ करने के लिये मंजन ले कर आयी।

कुरवा को अपने दाँत साफ करने के लिये पेड़ की हरी डंडी इस्तेमाल करने की आदत थी सो उसने सोचा कि वह पाउडर खाने के लिये था सो उसने उस पाउडर को अपने मुँह में डाल लिया।

उस पाउडर के खाने से उसको बहुत ज़ोर की खाँसी आ गयी। उसकी बेटी फिर भागती हुई आयी और उसको कई गिलास पानी पिला कर ठीक किया।

अब तक कुरवा ने काफी कुछ देख लिया था। उसको लगा कि वह अब इससे ज़्यादा इस मकान में और नहीं रह सकता था। उसने अपना छाता उठाया और जल्दी से सबको नमस्ते करके वहाँ से चल दिया।

जब वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नी उसका बेसब्री से इन्तजार कर रही थी। वह उछल कर उसका स्वागत करने के लिये बाहर आयी और अपनी दूसरी बेटी का हाल पूछा कि वह कैसी है।

कुरवा ने अपने माथे से अपना पसीना पोंछा एक लम्बी साँस भरी और कहा — "हमारी छोटी बेटी का हाल ठीक नहीं है। वह बहुत बड़ी मुसीबत में है। उसके पास तो बैठने के लिये घास की एक चटाई भी नहीं है। सुबह सुबह वह एक अजीब से स्वाद का मुट्ठी भर पाउडर खाती है।

और जहॉ तक खाना खाने का सवाल है उसकी सब्जियॉ तो तेल में तैरती हैं और लोगों को वहॉ तब तक खाना पड़ता है जब तक उनका पेट न फटने लगे।"

उसकी पत्नी तो यह सुन कर सकते में आ गयी और उसकी तरफ देखती रह गयी।

कुरवा ने आगे कहा — "और रातें तो वहॉ और भी खराब हैं क्योंकि वहॉ लोगों को एक अजीब से बिस्तर पर चढ़ना पड़ता है। उस पर तो बस केवल एक बन्दर ही चढ़ सकता है।"

बूढ़े कुरवा और उसकी पत्नी ने अपनी अपनी बोरी बिछायी और सोने चले गये। पर उनके खयालों में उनकी छोटी बेटी ही घूमती रही जिसकी किस्मत इतनी अच्छी नहीं थी कि वह फर्श पर सो सकती।

9 सूअर इतने गन्दे क्यों[27]

यह लोक कथा भारत के मेघालय क्षेत्र की लोक कथाओं से ली गयी है। मेघालय भारत की पूर्वीय सीमा पर स्थित है। यहॉ जंगली जानवरों की लोक कथाऐं बहुत लोकप्रिय हैं।

हम सब जानते हैं कि सूअर बहुत गन्दे रहते हैं। पर ऐसा क्यों होता है। मेघालय के लोगों के पास इसका जवाब है। तो आओ पढ़ते हैं कि वे इसकी क्या वजह बताते हैं।

मेघालय के क्षेत्र में जंगल बहुत हैं जो हिमालय की तराई में फैले पड़े हैं और इसकी वजह से वहॉ बारिश बहुत होती है। और बारिश की वजह से वहॉ के पेड़ घास आदि भी बहुत हरे और चमकीले होते हैं।

एक समय में यहॉ बहुत सारे जानवर रहते थे जैसे चीते राइनो[28] हिरन खरगोश जंगली भैंसे जंगली सूअर आदि। उनमें चीता उन सबका राजा था और दूसरे सभी जानवर उससे डर कर रहते थे।

[27] Why Pigs Are So Dirty – a folktale from Meghalaya, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/33/folktale_meghalaya_indian_folktale.htm

[28] Rhineceros – a big beast like a big bull – see its picture above.

पर यह चीता एक बहुत ही अच्छा राजा था। वह सिवाय अपनी भूख मिटाने के किसी और जानवर को नहीं मारता था। जब उसका पेट भरा होता तो वह जंगल में बहुत ही आराम से चलता था। कभी कभी वह किसी गीत की धुन भी गुनगुनाता रहता। कभी कभी वह जंगल में अपने काम से जा रहे दूसरे जानवरों की तरफ देख कर मुस्कुरा भी देता।

एक दिन चीते ने एक जंगली भैंस मारी और उसको मन भर कर खाया। खाना खाने के बाद पानी पीने के लिये वह जंगल में एक तालाब पर गया।

इत्तफाक की बात कि वहीं एक छोटा मोटा सूअर भी पानी पीने के लिये आया। सूअर ने चीते को वहॉ पानी पीते देखा तो वह डर के मारे कॉप गया। वह इस आशा में सॉस रोक कर खड़ा हो गया कि चीता उसको देखेगा नहीं।

पर चीते ने उसको पहले ही देख लिया था। उसको देख कर चीते ने अपने होठ चाटे और सोचा कि इस सूअर को पकड़ना तो उसके लिये कोई मुश्किल काम नहीं होगा पर इसके लिये उसको उसे डराना नहीं चाहिये नहीं तो इस तालाब पर वह फिर नहीं आयेगा।

ऐसा सोचते हुए और यह बहाना बनाते हुए कि उसने सूअर को बिल्कुल नहीं देखा वह वहॉ से चुपचाप चला गया।

जब चीता सूअर की ऑखों से बिल्कुल ओझल हो गया तब जा कर कहीं सूअर की सॉस में सॉस आयी। उसकी हिम्मत लौट आयी

घमंड। उसी घमंड में उसने ज़ोर से कहा कि चीता वहॉ से इसलिये चला गया क्योंकि वह उससे डर गया था।

धीरे धीरे चीता बूढ़ा हो गया और कमजोर भी हो गया। सो एक चीता जो एक छोटे से सूअर से डर गया था उसको राजा के पद से इस्तीफा दे देना चाहिये। बल्कि अब तो उस सूअर को जंगल का राजा हो जाना चाहिये।

राजा बनने के लिये किसी भी जानवर का ताकतवर होना जरूरी है सो यह तय किया गया कि सूअर चीते से लड़े और अपनी ताकत दिखाये।

यह सोच कर ही कि उसके पास बहुत सारे नौकर होंगे सूअर उस तालाब के किनारे शान से चलने लगा। इत्तफाक से चीता भी वहॉ पानी पीने आया हुआ था। चीते को देख कर उसने चीते को इस तरह पुकारा जैसे किसी नौकर को पुकारते हैं।

खुशकिस्मती से उस समय चीते को पेट भरा हुआ था और वह अच्छे मूड में था इसलिये वह सूअर के बुलाने पर भी नहीं आया।

वह केवल थोड़ा सा गुर्राया और पीछे की तरफ मुॅह करके बोला कि अगर वह उससे लड़ना ही चाहता है तो वह दो दिन बाद उससे लड़ाई के लिये आ सकता था।

सूअर इस पर राजी हो गया और अपने आपको ताकतवर समझते हुए बहुत खुश हो गया। यह सब बताने के लिये खुशी खुशी वह अपने दोस्तों के पास जंगल में चला गया।

उसके सब दोस्त उसको खुश देख कर चौंक गये। उन्होंने उसकी खुशी की वजह पूछी तो सूअर ने अपनी पूँछ हिलाते हुए कहा कि अब उनको उसके साथ ज़्यादा इज़्ज़त से बरताव करना चाहिये क्योंकि वह अब उनका होने वाला राजा है।

यह सुन कर उसके दोस्तों को हँसी आ गयी तो सूअर ने उनको सारी कहानी सुनायी। उसके सारे दोस्त तो उसकी तरफ बड़ी बड़ी आँखों से देखते के देखते रह गये। उनको तो यह विश्वास ही नहीं हुआ कि उनके दोस्त ने चीते को लड़ने के लिये ललकारा था।

एक ने तो बल्कि उससे यह दोबारा भी पूछ लिया कि क्या वाकई उसने चीते को लड़ने के लिये ललकारा था।

तभी कुछ और जानवर आ गये तो उन्होंने बताया कि चीता उस समय भूखा नहीं था इस वजह से उसने सूअर को छोड़ दिया नहीं तो वह उसको तो उसी समय खा जाता।

उसके सारे दोस्त इस बात पर राजी हो गये कि यही बात ठीक हो सकती थी। जब सूअर ने देखा कि उसके सारे दोस्त ऐसा ही कह रहे हैं तो उसको भी लगा कि शायद उसके दोस्त ठीक कह रहे थे।

यह सोच कर तो वह डर के मारे काँपने लगा। उसको अपने फैसले पर पछतावा होने लगा कि उसने चीते को लड़ने के लिये क्यों ललकारा। उसने निश्चय किया कि वह अब तालाब पर नहीं जायेगा।

पर उसके दोस्त अभी भी उससे राजी नहीं थे। वे बोले कि अब अगर चीते ने उसको तालाब पर नियत दिन और समय पर नहीं पाया तो वह तो सारे सूअरों से लड़ाई का ऐलान कर देगा। और वह तो गिन गिन कर सारे सूअरों को ढूँढ ढूँढ कर मार देगा। यह तो ठीक नहीं है। इसलिये अब यही अच्छा है कि वह अपने किये का सामना करे।

वह छोटा सूअर तो अब अपने ही मजाक से डर रहा था। उसने उनकी सहायता माँगी तो उन्होंने उसको सलाह दी कि इस बारे में वे उसके लिये कुछ नहीं कर सकते उसको बाबा सूअर से सलाह लेनी चाहिये।

छोटा सूअर तुरन्त ही बाबा सूअर के पास पहुँचा और जा कर उनको सारी कहानी बतायी।

बाबा सूअर उस समय अपना दोपहर का खाना खा रहे थे पर फिर भी उन्होंने छोटे सूअर को इस काम के लिये एक अच्छी डॉट पिलायी। छोटा सूअर उनके पैरों पर गिर पड़ा और उनसे उसको इस परेशानी से निकालने के लिये सहायता माँगी।

तब बाबा सूअर उसके कान में फुसफुसाये कि इससे पहले कि वह चीते के पास जाये उसको अपने आपको जितना गन्दा वह कर सकता है कर लेना चाहिये।

छोटा सूअर तो बाबा सूअर की इस सलाह पर उछल पड़ा। उसने वैसा ही किया जैसा बाबा सूअर ने उससे करने के लिये कहा था।

चीते के पास जाने से पहले वह कीचड़ में खूब अच्छी तरह से लोटा और फिर अपने आपको सुखाया। वह फिर लोटा और फिर सुखाया। ऐसा उसने कई बार किया तो जब तक वह चीते के पास पहुँचा तब तक तो वह सूअर बिल्कुल भी नहीं लग रहा था। वह तो बस गन्दगी का एक बहुत बड़ा ढेर लग रहा था।

चीता तो वहाँ पहले ही पहुँचा हुआ था। वह वहाँ अपने खाने का इन्तजार कर रहा था। पर जब उसने अपने सामने एक छोटे मोटे सूअर की बजाय गन्दगी के एक बड़े ढेर को देखा तो वह तो दंग रह गया। उसको उस सूअर को इतना गन्दा देख कर बहुत धक्का लगा।

उस छोटे सूअर ने उसको बताया कि वह वही सूअर था जिसके साथ उसको लड़ाई लड़नी थी। चीते ने सूअर की तरफ एक बार और देखा और नफरत से अपनी नाक सिकोड़ ली।

स्वादिष्ट सूअर खाने के उसके सब सपने चूर चूर हो गये थे। अब तो वह उससे बस छुटकारा पाने की कोई तरकीब सोच रहा था। वह उस पर गरजा और उससे अपनी नजरों से दूर हो जाने के लिये कहा।

हालॉकि सूअर की टॉगें डर के मारे कॉप रहीं थी पर फिर भी वह वहॉ से तुरन्त ही भाग लिया। भागा भागा वह सीधा बाबा सूअर के पास गया और दिल से उनका धन्यवाद किया।

उसके बाद जंगल के सारे सूअरों ने एक मीटिंग की और उसमें यह तय किया कि वे हमेशा गन्दे ही रहेंगे ताकि चीते को उनको खाने का लालच न आ सके।

और इसी लिये आज तक सारे सूअर इतने गन्दे रहते हैं।

10 आधा आधा[29]

यह लोक कथा भारत के पंजाब प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह लोक कथा दो ऐसे लोगों की है जो एक ही गॉव में रहते थे और दोनों आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे। एक का नाम था बन्ता सिंह और दूसरे का नाम था घंटा सिंह। ये आपस में एक दूसरे को पसन्द भी बहुत करते थे और एक दूसरे के साथ साथ ही रहते थे।

पर इन दोनों में एक बहुत बड़ा अन्तर था। घंटा सिंह एक चालाक और मौके का फायदा उठाने वाला आदमी था जबकि बन्ता सिंह एक बहुत ही ईमानदार और सीधा सादा आदमी था।

बन्ता सिंह हमेशा उन बातों को मान लेता था जो घंटा सिंह उससे कहता। वह घंटा सिंह के प्लान में कभी फायदे या नुकसान के बारे में नहीं सोचता था।

न तो बन्ता सिंह के पास ही ज़्यादा पैसा था और न घंटा सिंह के पास ही बहुत पैसा था। जाहिर है जब उनके पास ज़्यादा पैसा नहीं था तो उनके पास बहुत ज़्यादा सामान भी नहीं था।

एक दिन घंटा सिंह के दिमाग में एक बहुत ही बढ़िया प्लान आया सो उसने बन्ता सिंह से पूछा कि क्या वह उसके इस प्लान में

[29] Fifty-Fifty – a folktale from Punjab, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/30/fiftyfifty_indian_folktale.htm

उसका साथी बनेगा। जैसा कि हमेशा होता था बन्ता सिंह तुरन्त ही राजी हो गया।

घंटा सिंह ने कहा कि क्योंकि उनके पास बहुत सारा सामान तो हे नहीं तो क्यों न वे अपने सामान को बॉट कर इस्तेमाल करें। वे अपना अपना सामान आपस में बराबर बराबर बॉट लेते हैं।

बन्ता सिंह ने इस विचार से खुश हो कर घंटा सिंह का हाथ इतने ज़ोर से पकड़ कर हिलाया कि उसका हाथ चटक गया।

घंटा सिंह ने एक पल सोचा और फिर बन्ता सिंह से कहा कि उनके पास तीन चीज़ें एक सी थीं। घंटा सिंह के पास एक गाय थी और बन्ता सिंह के पास एक अच्छा गरम कम्बल था और उसके घर के पीछे बेर[30] का एक पेड़ था। सो वे इन तीनों चीज़ों को आपस में बराबर बराबर बॉट लेंगे।

सीधा सादा बन्ता सिंह घंटा सिंह की चालाकी को भॉप भी नहीं सका और इस बॅटवारे पर राजी हो गया।

घंटा सिंह ने पहले ही सब बॅटवारा कर रखा था। उसने बन्ता सिंह से कहा कि गाय का आगे का हिस्सा बन्ता सिंह का होगा और उसके पीछे का हिस्सा वह खुद ले लेगा।

बेर के पेड़ का तना और जड़ बन्ता सिंह ले लेगा और वह अपना काम केवल उसके पत्ते और टहनियों से ही चला लेगा।

[30] Ber is called wood apple.

और जहॉ तक कम्बल का सवाल है बन्ता सिंह उसको दिन भर अपने पास रख सकता है क्योंकि दिन में घंटा सिंह को उसकी जरूरत नहीं थी।

यह सुन कर बन्ता सिंह ने उसके इस बॅटवारे का विरोध किया कि कम्बल तो वह भी इस्तेमाल करना चाहता था। इस पर चालाक घंटा सिंह बोला कि वह कम्बल केवल रात में ही इस्तेमाल करेगा।

इस तरह से इस बॅटवारे के साथ पहले एक हफ्ता गुजरा। फिर दो हफ्ते गुजरे। और फिर धीरे धीरे एक महीना गुजर गया।

अब बन्ता सिंह को लगने लगा कि घंटा सिंह के बॅटवारे में कहीं कुछ गलत है।

क्योंकि गाय का अगला हिस्सा उसके पास था तो यह उसका काम था कि वह सुबह सुबह उठे और उसको खाना खिलाये। उसके लिये कुॅए से बालटी भर कर पानी भी लाये ताकि वह उसको दो बार ताजा पानी पिला सके।

अब क्योंकि गाय के पीछे का हिस्सा घंटा सिंह का था तो उसका काम केवल उसको दुहने का था। वह रोज सुबह सुबह उसका एक बड़ा गिलास भर कर मखनी दूध पी जाता था। जबकि बन्ता सिंह को चाय का केवल एक छोटा सा गिलास ही मिल पाता।

जहॉ तक कम्बल का सवाल था वह बन्ता सिंह के बिस्तर पर सारा दिन ऐसे ही रखा रहता। वह दिन में तो उसको इस्तेमाल ही

नहीं करता था क्योंकि वह सुबह सुबह ही उठ जाता और फिर सारे दिन अपने काम में लगा रहता। वह उसको कब इस्तेमाल करता।

जब रात होती तो घंटा सिंह उसको उसके पास से ले जाता और उसमें दुबक कर उसकी गरमी में सो जाता। जबकि बन्ता सिंह को अपने आपको गरम रखने के लिये रात घुटने पेट में घुसा कर गोला बन कर गुजारनी पड़ती।

बन्ता सिंह अपने पेड़ के बेर खाना चाहता था। महीनों तक उसने अपने पेड़ की सेवा की थी। उसके आस पास की बेकार की घास साफ की थी। उसकी जमीन जोती थी। जब भी उसको जरूरत थी उसको खाद दी थी पानी दिया था। उसके फल उसकी ऑखों के सामने आ रहे थे।

पर जब पहले पहले बेर आये तो घंटा सिंह ने उनको तोड़ कर खा लिया। उसने बन्ता सिंह को एक बेर देना तो दूर उससे एक बार पूछा भी नहीं कि क्या वह बेर खायेगा।

इन सब घटनाओं से परेशान हो कर बन्ता सिंह घंटा सिंह से बहुत लड़ा। इस पर बेशरम घंटा सिंह बोला कि ऐसा ही तय हुआ था कि बेर के पेड़ की टहनियॉ और पत्ते घंटा सिंह के थे। अब बेर तो टहनियों पर ही लगते हैं इसलिये फल उसी के थे।

बन्ता सिंह इस बात पर नाराज तो बहुत हुआ पर कर कुछ नहीं सका क्योंकि बॅटवारा तो ऐसे ही हुआ था। आखिर परेशान सा वह

घूमने निकल गया। वह चलता गया चलता गया कि चलते चलते वह अपने गॉव के पास वाले जंगल के पास आ निकला।

वहॉ उसे एक साधु मिल गया जिसकी लम्बी लम्बी जटाऐं थीं और उसके सारे शरीर पर भस्म मली हुई थी। साधु ने बन्ता सिंह की तरफ देखा तो देखा कि वह बहुत दुखी सा चला आ रहा था।

साधु ने उससे उसके दुखी होने की वजह पूछी और उसने उसकी सहायता करने का वायदा भी किया अगर वह उसको अपने दुखी होने की वजह बता दे तो।

बन्ता सिंह ने उसको वे सारी घटनाऐं बता दीं जो पिछले कुछ दिनों में हुई थीं। सारी कहानी सुनने के बाद साधु ने कहा कि घंटा सिंह ने उसको धोखा दिया है। उसको अपने दोस्त की बात नहीं माननी चाहिये थी।

तब उसने उसको बताया कि उसको क्या करना है और यह उसको घंटा सिंह को सबक सिखाने के लिये करना ही चाहिये।

सारा प्लान सुन कर बन्ता सिंह बहुत खुश हुआ और खुशी खुशी घर वापस आया। जब शाम को दोनों दोस्तों ने खाना खा लिया तो घंटा सिंह सोने चला। बन्ता सिंह ने कम्बल उठाया उसको पानी में डुबोया और घंटा सिंह को दे दिया।

यह देख कर तो घंटा सिंह तो बस चीख ही पड़ा। उसका यह काम देख कर तो उसको बहुत गुस्सा आया। उसने गुस्से में भर कर बन्ता सिंह से पूछा कि उसने वह कम्बल पानी में क्यों भिगोया।

बन्ता सिंह ने ठंडे स्वर में जवाब दिया कि दिन में तो कम्बल उसका था सो वह उसका जो चाहे वह कर सकता था। चाहे वह पानी में भिगोये या सूखा रखे इससे उसे क्या मतलब।

घंटा सिंह तो यह देख सुन कर इतना आश्चर्यचकित हुआ कि उसका मुँह तो खुला का खुला रह गया।

वह यह सोचने लगा कि आज बन्ता सिंह को क्या हुआ था जो वह उससे ऐसा बरताव कर रहा था। पर वह कुछ बोला नहीं। वह बस सोते में बड़बड़ाता रहा हालॉकि वह सारी रात ठंड से कॉपता रहा।

अगली सुबह घंटा सिंह उठा और जल्दी जल्दी गाय दुहने चला। अब बन्ता सिंह तो पहले ही जाग चुका था। उसने गाय को चारा भी खिला दिया था और ताजा पानी भी पिला दिया था पर फिर भी वह वहीं घूम रहा था।

घंटा सिंह ने अपने घुटनों के बीच बालटी रखी और गाय को दुहने के लिये बैठ गया। जब उसकी बालटी आधी भर गयी तो बन्ता सिंह ने घास के एक तिनके से गाय की नाक में गुदगुदी कर दी।

बन्ता सिंह के गुदगुदी करने से गाय कूद पड़ी। उसने घंटा सिंह की वालटी में अपनी लात मारी तो बालटी घंटा सिंह के मुँह में जा कर लगी जिससे उसका जबड़ा बुरी तरह जख्मी हो गया।

अब तो घंटा सिंह का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया और वह बन्ता सिंह पर बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा। इस पर बन्ता सिंह फिर शान्ति से बोला कि गाय का अगला हिस्सा उसका अपना था वह वहॉ कुछ भी करे।

यह सुन कर घंटा सिंह फिर चुप रह गया वह तो कुछ बोल ही नहीं सका। उस सुबह वह अपना बड़ा गिलास भर कर दूध भी नहीं पी सका क्योंकि दूध तो करीब करीब सारा ही बिखर गया था। बालटी में बहुत थोड़ा सा दूध बचा था तो वह उसकी केवल एक छोटा सा गिलास चाय ही पी सका।

जब सूरज थोड़ा और ऊपर चढ़ा तो घंटा सिंह बेर के पेड़ की तरफ चल दिया और उसकी एक डाल पर बैठ कर एक एक करके उसके बेर खाने लगा। तभी अचानक बन्ता सिंह वहॉ कुल्हाड़ी ले कर आ गया और पेड़ का तना काटने लगा।

घंटा सिंह को बन्ता सिंह के इरादों का पता चल गया तो वह तो बहुत घबरा गया। उसने बन्ता सिंह से पूछा कि वह बेर के पेड़ का तना क्यों काट रहा था इससे तो वह गिर जायेगा।

बन्ता सिंह हॅसा और बोला कि पेड़ का तना तो उसका अपना था वह उसका जो चाहे करे। घंटा सिंह उसको रोक नहीं सकता था।

आखिर घंटा सिंह को पता चल गया कि वह अपने दोस्त को धोखा नहीं दे सकता था। इसलिये उसने अपने इस बॅटवारे में बदल

कर ली। इस बार यह बॅटवारा बन्ता सिंह ने किया और वह क्योंकि बहुत सीधा और एक न्यायपूर्ण आदमी था सो उसका बॅटवारा भी न्यायपूर्ण था।

क्या था उसका बॅटवारा? उसने कहा कि उसका कम्बल एक रात बन्ता सिंह इस्तेमाल करेगा और एक रात घंटा सिंह। गाय की देखभाल भी दोनों करेंगे और दूध भी दोनों आधा आधा बॉटेंगे।

बेर के पेड़ की देखभाल भी वे लोग दोनों एक साथ करेंगे। और फिर जब बेर के पेड़ पर फल आयेंगे तो उनको भी वे आधे आधे बॉट लेंगे।

घंटा सिंह ने इस बॅटवारे को स्वीकार किया। वह बन्ता सिंह के साथ इस तरह से चीज़ें बॉटने पर बहुत खुश था। अब दोनों फिर से बहुत अच्छे दोस्त हो गये थे।

11 राक्षस के लिये काम[31]

यह लोक कथा भारत के पंजाब प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है। यह लोक कथा यह दिखाती है कि लालच किसी आदमी को कहॉ तक गिरा देता है।

पंजाब अपनी उपजाऊ जमीन और अपने अमीर किसानों के लिये बहुत मशहूर है। इस लोक कथा में एक अमीर किसान किस तरह लालची बन जाता है और फिर किस तरह अपने उस लालच की वजह से मुसीबत में फॅस जाता है यही बताया गया है।

यह लोक कथा यह भी बताती है कि जब कोई आदमी मुसीबत में फॅस जाता है तो कैसे उसको एक स्त्री उस मुसीबत से बाहर निकालती है – अपनी ताकत से नहीं बल्कि अपनी अक्लमन्दी से।

एक बार की बात है कि पंजाब के एक गॉव में शेरदिल नाम का एक आदमी रहता था। वह एक बहुत ही अमीर आदमी था। उसके पास खेती के लिये कई एकड़ जमीन थी और इतने सारे जानवर थे कि उसको यही पता नहीं था कि वह उनका क्या करे।

शेरदिल ने अपने खेतों का काम करने के लिये भी सौ आदमी नौकरी पर रखे हुए थे। वह इतना अमीर जरूर था पर वह कंजूस भी बहुत था। वह नौकरों को खाना खिलाने के लिये और उनको

[31] Work For the Demon – a folktale from Punjab, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/punjabi_folktale_indian_folktale.htm

उनकी तनख्वाह देने के लिये ज़रा सा भी पैसा खर्च नहीं करना चाहता था।

शेरदिल की एक पत्नी थी जिसका नाम था गुलाबो। उसका स्वभाव शेरदिल के स्वभाव से बिल्कुल उलटा था। वह धीरज रखने वाली थी अच्छे स्वभाव की थी और बहुत अक्लमन्द थी।

जब भी कभी शेरदिल खर्चे के बारे में भुनभुनाता तो वह उसको डॉटते हुए कहती कि तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि हमको उनको पैसा नहीं देना चाहिये या हमको उनके खाने पर खर्च नहीं करना चाहिये।

वे लोग हमारे लिये सारे साल कितना काम करते हैं। इसलिये उनको उनकी तन्ख्वाह देने में तुमको परेशानी क्यों होती है। उनको उनकी तन्ख्वाह तो मिलनी ही चाहिये। बल्कि भगवान ने तुमको जो कुछ भी दिया है उसके लिये तुमको भगवान को धन्यवाद देना चाहिये।

पर गुलाबो की बातों का शेरदिल पर कोई असर नहीं पड़ता।

एक दिन शेरदिल अपना हिसाब किताब करने बैठा तो तुरन्त ही अपने नौकरों के ऊपर किये गये खर्चे के ऊपर भुनभुनाने लगा। वह बोला कि इस सारे काम के लिये वह केवल एक नौकर ही रखेगा। उसकी पत्नी ने उसके इस विचार का विरोध किया।

असल में उसके दिमाग में एक बहुत ही बुरा विचार आया था कि अपना काम करने के लिये वह इतने सारे नौकरों की बजाय एक

राक्षस रखेगा। वह उसका सारा काम कर देगा। जितना वह इस बारे में सोचता रहा उतना ही उसको यह विचार अच्छा लगता रहा।

आखिर शेरदिल ने उस साधु के पास जाने का अपना दिमाग बना ही लिया जो लोगों को ऐसा वरदान दे कर उनकी मुश्किलों को आसान बना दिया करता था। सो वह उस साधु के पास चल दिया।

शेरदिल को उस साधु के पास पहुँचने में दो दिन लग गये। उसकी झोंपड़ी एक घने जंगल में थी। जब शेरदिल उस साधु के पास पहुँचा तो वह ध्यान में बैठा हुआ था।

काफी देर के बाद उसने अपनी ऑखें खोलीं और शेरदिल को अपने सामने बैठा देख कर उससे पूछा कि वह वहॉ क्यों आया था और उसे क्या चाहिये था। शेरदिल ने उसको सिर झुकाया और अपने आने का मतलब बताया। साधु ने तुरन्त ही उसकी इच्छा पूरी कर दी।

उसने एक डंडी उठायी अपनी ऑखें बन्द कीं कुछ शब्द बुड़बुड़ाये और वह डंडी जमीन में गाड़ दी। कुछ पल में ही उसमें से धुँए की एक पतली सी लकीर निकलनी शुरू हो गयी। धीरे धीरे वह धुँआ एक छोटा सा बादल बन गया और उसमें से बिजली कड़कने की सी आवाज होने लगी।

और उसमें से निकला एक नीले रंग का बहुत बड़ा सा राक्षस – इतना बड़ा जितना कि एक पीपल का पेड़ होता है।

वह राक्षस इतना भयानक लग रहा था कि शेरदिल उसको देख कर भागना चाह रहा था पर किसी तरह वह वहॉ रुका रहा।

राक्षस गरजा और उसने पूछा कि उसको वहॉ क्यों बुलाया गया है। जब साधु ने उसको पूरी बात बतायी तो राक्षस एक बार फिर गरजा और उसने पूछा कि क्या शेरदिल को उसके काम करने की शर्तों का पता था।

उसकी शर्त यह थी कि उसको दिन रात काम मिलना चाहिये। जिस समय भी उसको काम नहीं दिया गया तो वह शेरदिल को ही खा जायेगा।

शेरदिल यह सुन कर बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और बोला कि उसके पास तो इतना काम था कि उसको तो एक मिनट की भी फुरसत नहीं मिलेगी। फिर उसने राक्षस से कहा कि वह उसको उसके घर पहुॅचा दे।

शेरदिल के मुॅह से अभी ये शब्द निकले ही थे कि राक्षस ने उसको उठाया अपने बॉये कान के पीछे रखा और आसमान में उड़ गया। इस डर से कि वह कहीं गिर न पड़े शेरदिल ने राक्षस का कान अपने दोनों हाथों से ज़ोर से पकड़ रखा था और बाहर झॉक रहा था।

धरती उसको बहुत सारे रंगों की एक गेंद सी लगी। उसने तो डर के मारे अपनी ऑखें ही बन्द कर लीं। यकायक वह राक्षस नीचे

ऐसे उतरने लगा जैसे किसी ने हवा में अंडा फेंक दिया हो। पल भर में ही उसने शेरदिल को उसके घर की सीढ़ियों पर उतार दिया।

शेरदिल तो उसकी इस छोटी सी उड़ान से ही थक गया था सो वह घर के अन्दर अपनी पत्नी को देखने के लिये भागा। लेकिन वह खुश भी बहुत था सो खुशी में आ कर उसने उसको दिखाया कि वह क्या करके आया था।

इससे पहले कि उसकी पत्नी उसके जवाब में कुछ कहती शेरदिल ने अपने सारे नौकरों को नौकरी से निकाल दिया और राक्षस को अपने खेत जोतने के लिये भेज दिया।

उसके बाद उसने कुछ जॅभाइयॉ लीं और एक अच्छी सी नींद लेने के लिये अपने बिस्तर पर लेट गया। लेटते ही उसकी ऑख लग गयी और वह सपना भी देखने लगा।

वह सपना देख ही रहा था कि किसी ने उसको कन्धे से पकड़ कर बहुत ज़ोर से हिलाया। जैसे ही उसने अपनी ऑख खोलीं तो देखा कि राक्षस उसके ऊपर झुका खड़ा था और उससे और दूसरा काम पूछ रहा था।

शेरदिल तो अपने कानों पर विश्वास ही नहीं कर सका। उसकी इतनी एकड़ जमीन थी और वह राक्षस उसे इतनी जल्दी जोत कर वापस आ गया था।

वह अपने घर की छत पर चढ़ गया और चारों तरफ देखने लगा कि वाकई उसने उसकी सारी जमीन जोत दी थी या नहीं। उसने देखा कि वाकई उसने उसकी वह सारी जमीन जोत दी थी।

सो उसने उसको उस मिट्टी में खाद ला कर मिलाने के लिये, बीज बोने के लिये और खेतों को पानी देने के लिये कहा। राक्षस तुरन्त ही वहॉ से गायब हो गया और शेरदिल फिर सो गया।

पर अभी उसने केवल दो चार खर्राटे ही मारे थे कि किसी ने उसे नींद से फिर जगा दिया। इस बार उसने उसे और ज़्यादा ज़ोर से जगाया और फिर से उसे और काम देने के लिये कहा क्योंकि उसने उसका पहले वाला दिया हुआ काम खत्म कर लिया था।

अब तक शेरदिल उससे कुछ तंग आ चुका था सो उसने उसको अपनी जमीन के चारों तरफ एक बाड़ लगाने के लिये कहा। राक्षस यह सुन कर फिर से वहॉ से चला गया पर शेरदिल अबकी बार उसके जाने के बाद सोया नहीं।

अपने रसोईघर की खिड़की से वह उसको लकड़ी और कुछ औजार इकट्ठे करता देखता रहा। उसने देखा कि वह एक के बाद एक लकड़ी काटता जाता और उनको हवा में उछालता जाता। वे लकड़ियॉ उछल उछल कर अपनी जगह पर लगती जातीं।

जैसे ही शेरदिल ने अपनी शाम की चाय पी वह राक्षस अपना काम खत्म करके फिर उसके पास और काम मॉगने आ पहुॅचा था।

अबकी बार शेरदिल ने उसके लिये काम सोच कर रखा हुआ था। उसने कहा कि वह उसके खेत में बना तालाब खाली कर दे और उसको नदी के ताजा पानी से भर दे। राक्षस यह सुन कर यह काम करने भी चला गया।

रात होने से पहले पहले वह यह काम खत्म करके आ गया और बोला कि उसने उसका कहा वह काम कर दिया अब उसको कोई और काम दिया जाये।

अब शेरदिल को अपने पास कोई काम दिखायी नहीं दे रहा था सो वह बोला कि अब वह कुछ आराम कर ले। इस पर राक्षस बड़ी ज़ोर से एक भयानक हॅसी हॅसा और बोला कि उसने तो कभी आराम किया ही नहीं वह नहीं जानता कि आराम क्या होता है।

इतनी देर में शेरदिल को इतनी हिम्मत आ गयी थी कि वह उससे यह कह सका कि अब वह अगली सुबह तक के लिये आराम करना चाहता था सो तब तक वह उसके खेतों की रखवाली करे ताकि जंगली जानवर उसके खेतों में न घुस सकें और उसके खेत बरबाद न कर सकें।

राक्षस तो उसके खेतों की रखवाली करने चला गया पर शेरदिल की ऑख सारी रात एक पल को भी नहीं झपकी। वह यही सोचता रहा कि वह कल सुबह उसको क्या काम देगा।

सुबह होने से पहले उसने अपनी पत्नी को उठाया और रोते हुए उसे अपनी परेशानी बतायी। गुलाबो ने उसको तसल्ली दी कि वह

बिल्कुल चिन्ता न करे और सब कुछ उसके ऊपर छोड़ दे। वह सब ठीक कर देगी।

जैसे ही सूरज निकला राक्षस ने शेरदिल के घर का दरवाजा ज़ोर ज़ोर से पीटना शुरू किया और चिल्लाया "मुझे और काम दो।"

गुलाबो ने बहुत ही ज़रा सा दरवाजा खोला और उसकी झिरी में से बाहर झॉका। राक्षस को देख कर वह दरवाजे के बाहर निकली और उससे बोली — "देखो सामने यह कुत्ता जा रहा है इसकी पूँछ टेढ़ी है ज़रा इसकी पूँछ सीधी कर दो।"

राक्षस झुका और उसकी पूँछ पकड़ कर उसकी पूँछ सीधी करने के लिये उसको एक झटका दिया तो उसकी पूँछ उस समय तो सीधी हो गयी पर जैसे ही उसने उसको छोड़ा तो वह फिर से टेढ़ी हो गयी।

राक्षस ने उसकी पूँछ फिर से पकड़ कर उसको झटका दिया तो वह एक बार फिर सीधी हो गयी। वह उसको पॉच मिनट तक पकड़े रहा पर फिर जब उसने उसको छोड़ा तो वह फिर से टेढ़ी हो गयी।

ऐसा उसने कई बार किया पर कुत्ते की पूँछ सीधी नहीं हुई। कुत्ता भी इतनी देर तक उसको अपनी पूँछ से खेलते देखता रहा। पर अचानक उसका धीरज छूट गया। वह उछल कर राक्षस पर कूद पड़ा।

दोनों एक दूसरे के पीछे भागने लगे राक्षस उसकी पूँछ पकड़ने के लिये और कुत्ता उसके ऊपर भौंकते हुए उसको काटने के लिये।

यह सब घंटों तक चलता रहा। आखिर राक्षस कुत्ते को पकड़ने की कोशिश करते करते थक गया। उसने यह भी स्वीकार कर लिया कि वह उसको दिया गया काम नहीं कर पाया था सो वह अपने आपसे शरमिन्दा भी था।

उसमें अब शेरदिल के परिवार के सामने आने की हिम्मत नहीं थी सो वह उसी जंगल में जा कर छिप गया जहाँ से वह आया था।

राक्षस के जाने के बाद शेरदिल और उसकी पत्नी ने चैन की साँस ली। शेरदिल ने अपने सारे नौकरों को वापस बुला लिया और नौकरी शुरू करने से पहले खूब अच्छा खाना खिलाया। और फिर उसके बाद कभी उनकी तनख्वाह और खाने के बारे में शिकायत नहीं की।

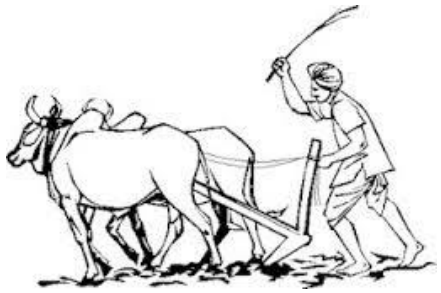

12 छिपी हुई घाटी[32]

यह लोक कथा भारत के सिक्किम प्रदेश की लोक कथाओं से ली गयी है जो वहॉ की लैपचा जनजाति[33] में कही सुनी जाती हैं। ये लोग यहॉ बहुत पुराने आये हुए हैं और कंचनजंगा के ढाल पर आ कर बस गये।

और बहुत सारी जनजातियों के लोगों की तरह से ये लोग भी कहानियॉ कहना सुनना बहुत पसन्द करते हैं। जाड़ों के मौसम में ये लोग आग के पास इकट्ठा हो कर बैठ जाते हैं और फिर कई विषयों पर कहानियॉ कहते सुनते हैं।

इनकी बहुत सारी कहानियॉ दुनियॉ बनाने, लैपचा लोग कैसे जन्मे, मौसम, प्राकृतिक चीज़ों और भूतों और राक्षसों की होती हैं। इनकी यह कहानी बहुत पुरानी है और यह खास तरीके से उन लोगों में कही सुनी जाती है जो शुरू शुरू में सिक्किम में आ कर बसे थे।

यह कहानी उन लोगों में केवल मुँह से ही कह कर पीढ़ी दर पीढ़ी दी जाती रही है।

सो लेपचा लोग कंचनजंगा की ढालू पहाड़ियों पर रहते हैं और वहॉ की पहाड़ियों की चोटियों को बड़े आश्चर्य से देखते हैं।

---

[32] The Secret Valley – a folktale from Sikkim, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/sikkimese_folktale_indian_folktale.htm

[33] Lepcha Tribe of Sikkim, India

उनका विश्वास है कि कंचनजंगा देवताओं और आत्माओं का घर है इसलिये बहुत पवित्र है। उनका यह भी विश्वास है कि कंचनजंगा की पहाड़ियों के पीछे एक छिपी हुई घाटी है जिसका नाम मायैल[34] है और इस घाटी में उन लोगों के पुरखे रहते हैं।

सैंकड़ों साल हो गये हैं पर इनका अभी भी यही विश्वास है कि वे लोग अभी भी वहॉ रह रहे हैं। वहॉ कोई नहीं जा सकता क्योंकि राक्षस मायैल के रास्ते की रक्षा करते हैं और वे वहॉ से किसी को नहीं गुजरने देते।

इसके अलावा उस रास्ते पर एक बहुत बड़ा पत्थर भी पड़ा हुआ है जिसे कोई आदमी नहीं हटा सकता।

एक समय था जब उनके ये पुरखे इस घाटी में आया करते थे जहॉ आजकल लैपचा लोग रहते हैं। वे इन लोगों में मिलते थे और उनकी खुशी और दुख में शामिल होते थे।

पर अब वे ऐसा नहीं करते क्योंकि वे समझते हैं कि लैपचा की नयी पीढ़ी अब उतनी पवित्र और अच्छी नहीं रही जैसी कि उसको होनी चाहिये।

जब उन पुरखों का आना रुक गया तो वे सब बहुत दुखी हुए। वे अपने पुरखों को ढूँढते रहे पर वे उनको कहीं मिले ही नहीं। सैंकड़ों सालों तक वे उनके आने की आशा करते रहे।

[34] Mayel

एक दिन एक बहादुर लैपचा दूर जंगल में शिकार करने के लिये गया तो वहॉ वह एक नदी के पास आया। उस नदी में एक पेड़ की एक शाख बहती चली आ रही थी।

बजाय इसके कि उस शाख पर पत्तियॉ लगी होतीं उसने देखा कि उस पर तो नीली–हरे रंग की सुइयॉ लगी हुई थीं और उसकी छाल ऐसी थी जैसे सोने की हो।

वह नौजवान जानता था कि ऐसा कोई पेड़ वहॉ घाटी में तो नहीं था जिसकी वह शाख होती सो उसने सोचा कि वह शाख जरूर ही मायैल से आयी होगी। और इसका मतलब यह भी था कि वह पेड़ नदी के ऊपर की तरफ था।

उसने अपना शिकार का थैला वहीं जंगल की जमीन पर रखा और शिकार को भुला कर वह उस नदी के ऊपर की तरफ पहाड़ी पर चढ़ने लगा। वह नदी के साथ साथ ऊपर चढ़ता जा रहा था। हालॉकि यह सब उसको इतना अच्छा लग रहा था कि वह कई दिनों तक चढ़ता रहा पर थका नहीं।

इस समय में उसने जंगल पार किया बरफ से ढकी कई पहाड़ियॉ पार कीं। कई दिनों तक चलने के बाद वह एक खुली जगह में आ निकला।

इस खुली जगह के बीच में एक झील थी। झील के चारों तरफ उस लैपचा नौजवान ने बहुत सारे सफेद पंख देखे। उनको देख कर

उसको बहुत आश्चर्य हुआ और वह सोचने लगा कि वे सफेद पंख किस चिड़िया के हो सकते थे।

उसने अपना चलना जारी रखा और आखीर में वह चारों तरफ से पहाड़ियों से घिरी एक हरी चमकती घास से भरी घाटी में पहुँच गया। यह जगह ही मायैल थी – लैपचा लोगों के पुरखों की जगह।

जिस समय वह नौजवान उस घाटी के पहले मकान तक पहुँचा तो सूरज डूब रहा था। उसने उस मकान का लकड़ी का मोटा सा दरवाजा खटखटाया तो एक बुढ़िया ने दरवाजा खोला।

वह उसको अन्दर ले गयी। उसने उसको एक कालीन पर बिठाया। फिर वह उसके पैर धोने के लिये गरम पानी ले कर आयी।

बाद में जब उसने आराम कर लिया तो उसने उसको सादे से भुने हुए अनाज, फल और दूध का खाना खिलाया जिससे उसका पेट भर गया।

तभी वहॉ पर एक बूढ़ा आ गया। नौजवान लैपचा को पता चला कि वह बूढ़े पति पत्नी वहॉ उस मकान में अकेले ही रहते थे क्योंकि उनके कोई बच्चा नहीं था।

वह नौजवान लैपचा उस कालीन पर लेट गया और बहुत जल्दी ही सो गया। वह सुबह होने तक गहरी नींद सोता रहा। सुबह उसकी ऑख बच्चों के खेलने की आवाज से खुली।

वह अपने बिस्तर से बाहर निकला तो उसने देखा कि एक लड़का और एक लड़की उस घर के चारों तरफ खेल रहे हैं। उसने सोचा कि वे उनके पड़ोसी के बच्चे होंगे और वे बूढ़ा और बुढ़िया दोनों खेतों पर काम पर गये होंगे।

पर जब उसने बच्चों से पूछा कि तुम कौन हो तो वे बहुत ज़ोर से हॅस पड़े। वे बोले कि वे तो वे बूढ़ा और बुढ़िया थे जिनसे वह कल रात मिला था।

यह सुन कर तो वह नौजवान बहुत ही परेशान हो गया। उसकी तो कुछ समझ में ही नहीं आया कि वे क्या कह रहे थे और वह क्या सुन रहा था।

बच्चों ने उसे बताया कि उनकी दुनियॉ किस तरह काम करती थी। सुबह वे लोग बच्चे बन जाते थे। दोपहर तक वे बड़े हो जाते थे और शाम तक फिर बूढ़े हो जाते थे। पर अगली सुबह वे फिर बच्चे बन जाते थे। इस तरह वे हमेशा रहते थे।

वह नौजवान लैपचा उस घाटी में वहॉ सात दिन तक रहा। वह वहॉ चारों तरफ घूमा चारों तरफ के दृश्य देखे उसने उस तरह के पेड़ों का एक पूरा जंगल देखा जिसकी हरी–नीली सुइयॉ थीं और सोने की छाल थी।

सुबह शाम उसने आसमान में इधर से उधर उड़ते हुए उन चिड़ियों के झुंड देखे जिनके सफेद पंख थे।

सात दिन बीतने के बाद बुढ़िया ने उससे कहा कि अब उसको अपनी दुनियॉ में वापस चले जाना चाहिये क्योंकि साधारण दुनियॉ का कोई भी साधारण आदमी वहॉ नहीं रह सकता था।

उसके वहॉ से आते समय उस बुढ़िया ने उसको कई तरह के अनाजों के बीज दिये और कहा कि अगर वह उन बीजों को जमीन में बो देगा तो हमेशा ही उसको लोगों के खाने के लिये काफी रहेगा। पर इनको उसे ठीक समय पर बोना चाहिये।

नौजवान ने पूछा कि यह उसको कैसे पता चलेगा कि इनको बोने का ठीक समय क्या है कि तभी सफेद पंखों वाली चिड़ियों का एक झुंड ऊपर आसमान में उड़ता गया।

वह बुढ़िया उन चिड़ियों को देख कर मुस्कुरायी और बोली कि वह ठीक समय पर सफेद पंखों वाली चिड़ियों का एक झुंड उधर भेजेगी वही उन बीजों के बोने का ठीक समय होगा।

लैपचा लोगों का विश्वास है कि इस तरह से उनको अनाज के दाने मिले। आज तक भी जब भी कभी वे सफेद पंखों वाली चिड़ियें आसमान में उड़ते देखते हैं तो उनको पता चल जाता है कि उनके अनाज बोने का समय आ गया।

जब वे बीज बो चुकते हैं तब वे मायैल के अपने पुरखों की प्रार्थना करते हैं कि वे उनको उनके बीजों की अच्छी पैदावार दें।

13 पॉसा पलट गया[35]

बहुत सारी लोक कथाऐं न्याय के ऊपर आधारित होती हैं। वे इस बात पर ज़ोर देती हैं कि अपराधी को न्याय मिलना ही चाहिये।

इस तरह से चोर धोखा देने वाले और दूसरे बुरे आदमियों को सजा मिलनी ही चाहिये। और ईमानदार आदमी को उसकी ईमानदारी का इनाम भी मिलना ही चहिये।

इस कहानी में यह एक सादा सा न्याय है। इसमें कोई कानून की बहस नहीं है कोई वकील नहीं है बल्कि एक जज एक सादा सा जाल बिछा कर अपराधी को पकड़ता है।

पॉसा पलट गया तमिल नाडु की एक बहुत पुरानी लोक कथा है इसमें वहॉ की पारम्परिक शादी के रीति रिवाज और हाथी की महत्ता दिखायी गयी है। हाथी वहॉ पर अभी बहुत लोकप्रिय है और बहुत सारे मौकों पर इस्तेमाल में आता है।

एक बार की बात है कि तमिल नाडु के गॉव में एक कुम्हार रहता था। उसके केवल एक ही बच्चा था और वह था एक बेटा। कुम्हार होने की वजह से वह कोई अमीर आदमी तो नहीं था पर उसने अपने बेटे के बारे में बहुत कुछ सोच रखा था।

[35] Table Turned – a folktale from Tamil Nadu, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/tamil_folktale_indian_folktales.htm

वह अपने बेटे के खाने और कपड़ों पर बहुत अच्छी तरह से खर्च करता था और अपने बेटे को स्कूल भी भेजता था। धीरे धीरे उसका बेटा बड़ा हो गया और एक सुन्दर नौजवान हो गया। अब वह अपनी कमाई अपने आप करने लायक हो गया था। इसलिये अब उसकी शादी करने का समय आ गया था।

कुम्हार ने अपने बेटे की तरफ देखा तो उसका सीना गर्व से फूल गया। उसने अपने बेटे की शादी के बहुत अच्छे अच्छे प्लान बना रखे थे जिसमें उसने बहुत बढ़िया गाने बजाने वालों को बुलाना था। बहुत अच्छी सजावट करवानी थी। बहुत अच्छे फूल लगवाने थे। और बहुत अच्छा खाना खिलवाना था।

शादी के बाद उसको अपने बेटे और बहू को हाथी पर चढ़ा कर गॉव भर में घुमाना था। जैसे अमीर आदमियों के बच्चे हाथी पर चढ़ कर शहर भर में घूमने निकलते हैं ऐसे ही उसको भी उनको हाथी पर चढ़वाना था।

उसी गॉव में एक तेल बेचने वाला भी रहता था जिसके पास एक हाथी था। वह अपना हाथी कुछ पैसों के बदले में किराये पर दिया करता था।

कुम्हार उस तेल बेचने वाले के पास उसका हाथी मॉगने गया और उससे उसका हाथी एक दिन के लिये किराये पर ले लिया। उस रात उस कुम्हार ने अपने वेटे बहू का एक बहुत ही शानदार जुलूस निकाला।

दुलहा और दुलहिन दोनों ने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन रखे थे। दोनों हाथी पर बैठे थे जिसको उस मौके के लिये खास तरीके से सजाया गया था।

उनके पीछे पीछे बहुत सारे खुश खुश आदमी स्त्रियॉ बच्चे चल रहे थे। ढोल बजाने वाले और गवैये उनके साथ साथ चल रहे थे। कि अचानक हाथी गिर पड़ा और मर गया।

यह देख कर कुम्हार तो बेचारा सकते में आ गया क्योंकि हाथी अभी तक तो ठीक था फिर इतनी जल्दी उसको क्या हो गया कि वह मर गया। किसी की भी समझ में नहीं आया कि उसको अचानक क्या हो गया था।

कुम्हार बेचारा रात भर घटनाओं पर विचार करता रहा। अगली सुबह वह तेल बेचने वाले के पास गया और बोला — "मुझे बहुत अफसोस है कि आपका हाथी मर गया।" कह कर उसने उसको या तो दूसरा हाथी या फिर हाथी की पूरी कीमत देने का वायदा किया।

तेल बेचने वाला स्वभाव से ही झगड़ालू आदमी था। वह खड़ा हो कर कुम्हार पर चिल्लाने लगा कि उसको तो अपना वही हाथी चाहिये था जिसको उसने पाला था।

अब यह तो साफ था कि कुम्हार वही हाथी वापस नहीं ला सकता था क्योंकि वह तो मर गया था। इसलिये तेल बेचने वाले ने कचहरी में शिकायत कर दी।

जब उनका मामला सुनने का दिन आया तो जज ने तेल बेचने वाले से उसकी शिकायत पूछी। तेल बेचने वाला बोला कि कुम्हार ने एक दिन के लिये उसका हाथी किराये पर लिया था पर वापस नहीं किया।

अब जज ने कुम्हार से पूछा कि उसने तेल बेचने वाले का हाथी क्यों वापस नहीं किया तो कुम्हार ने जज को सारी कहानी बता दी और वही कहा जो उसने तेल बेचने वाले से कहा था कि वह उसको या तो दूसरा हाथी दे देगा या फिर उसके हाथी की पूरी कीमत दे देगा।

जज ने सोचा कि यह सौदा ठीक भी था। उसने तेल बेचने वाले को समझाने की बहुत कोशिश की कि इन हालात में यह सौदा ठीक था पर वह था कि कुछ भी सुनने को तैयार ही नहीं था।

वह अपनी जिद पर अड़ा हुआ था कि उसको तो अपना वाला हाथी ही चाहिये और जज से कहा कि वह कुम्हार को इस बात के लिये ज़ोर दें कि वह उसका अपना हाथी वापस कर दे।

जज एक अक्लमन्द आदमी था। उसने देखा कि तेल बेचने वाले से बहस करने से कोई फायदा नहीं है सो उसने मुकदमा अगले दिन के लिये रख दिया।

यह सुन कर तेल बेचने वाला वहॉ से चला गया। जब वह वहॉ से चला गया तो जज ने कुम्हार को बुलाया और उससे कहा कि उसको मालूम था कि उसका सौदा एक ईमानदारी का सौदा था फिर

भी वह तेल बेचने वाले को उस सौदे पर राजी नहीं कर सका। इसलिये उसने कुम्हार को एक प्लान समझाया।

कह कर उसने कुम्हार के कान में कुछ फुसफुसाया। उसको सुन कर कुम्हार वहॉ से हॅसता मुस्कुराता चला गया।

अगले दिन सुबह को जब कचहरी खुली तो वहॉ कुम्हार कहीं नहीं था। तेल बेचने वाला यह कहता हुआ इधर से उधर घूम रहा था कि यह कुम्हार तो लगता है कचहरी से डर कर भाग गया।

थोड़ी देर तक इन्तजार करने के बाद तेल बेचने वाले ने जज से कहा "ऐसा लगता है कि कुम्हार कचहरी आने में डर रहा है इसलिये वह अपने घर में छिपा बैठा है।"

सो उसने कचहरी से कुम्हार के घर जाने और उसको खुद वहॉ से लाने की इजाज़त मॉगी। जज ने यह इजाज़त उसको तुरन्त ही दे दी और साथ में कचहरी का एक जूनियर औफीसर साथ कर दिया।

दोनों कुम्हार के घर पहुॅचे। तेल बेचने वाले ने उसके घर का दरवाजा बहुत ज़ोर से खटखटाया पर अन्दर से कोई जवाब नहीं आया। उसने दरवाजे पर अपने घूॅसे से भी मारा और अपनी सबसे ऊॅची आवाज में कुम्हार का नाम ले कर भी पुकारा पर अन्दर तो बिल्कुल ही शान्ति थी कोई आवाज नहीं थी।

यह देख कर तेल बेचने वाले को बहुत गुस्सा आ गया और गुस्से में भर कर उसने दरवाजे को एक बहुत ज़ोर का धक्का दिया।

अब उसको यह तो पता नहीं था कि दरवाजे के पीछे कुम्हार ने अपने मिट्टी के बरतन लगा रखे थे सो जैसे ही उसने दरवाजे में धक्का मारा तो उसके सारे बरतन टूट गये।

बस उसी समय कुम्हार अपने पिछले दरवाजे से वहॉ आ गया और रोते हुए उस पर अपने मिट्टी के बरतन तोड़ने का इलजाम लगा दिया।

वह बोला कि तेल बेचने वाले ने उसके पुरखों के दिये हुए बरतन तोड़ डाले थे और वे बरतन अब किसी भी तरह से वापस नहीं लाये जा सकते थे। अब वह तेल बेचने वाले से अपने वही बरतन वापस मॉग रहा था।

अब परेशान होने की तेल बेचने वाले की थी। उसने कुम्हार से सौदा किया कि अगर वह उससे अपने वही मिट्टी के बरतन नहीं मॉगे तो वह भी उससे अपना वही हाथी नहीं मॉगेगा और मुकदमा वापस ले लेगा।

कुम्हार काफी देर तक ना नुकुर करने का बहाना करता रहा पर आखीर में उसने उसकी बात मान ली और मामला तय हो गया कि न तो कुम्हार अपने वही बरतन मॉगेगा और न ही तेल बेचने वाला अपना वही हाथी मॉगेगा। मुकदमा वापस ले लिया गया।

इस तरह तेल बेचने वाला दोनों तरफ से हार गया। उसका हाथी भी गया और उसको हाथी का पैसा भी नहीं मिला।

हालॉकि कुम्हार के भी थोड़े से बरतन टूट गये पर वे इतने कीमती नहीं थे जितना कि तेल बेचने वाले का हाथी। एक हफ्ते के अन्दर अन्दर ही उसने नये बरतन बना लिये थे।

14 जौनपुर का काज़ी[36]

बहुत पहले उत्तर प्रदेश में मौलवी साहब या काज़ी बहुत ही मुख्य आदमी हुआ करते थे। मौलवी साहब अक्सर बच्चों को प्राइमरी स्कूलों में पढ़ाया करते थे। मौलवी लोगों की कई लोक कथाऐं मशहूर हैं। ऐसे ही एक मौलवी साहब की लोक कथा हम यहॉ तुम्हारे लिये दे रहे हैं।

एक बार एक मौलवी साहब थे जो एक गॉव के स्कूल में बच्चों को पढ़ाया करते थे। हालॉकि वह स्कूल बहुत छोटा सा था। केवल एक कमरे का और उसमें मुट्ठी भर बच्चे पढ़ते थे। पर मौलवी साहब की उस सारे गॉव में इज़्ज़त बहुत थी।

गॉव वाले समझते थे उनको सब कुछ आता था सो जब भी उनको कुछ पूछना होता था तो वह उसका जवाब पाने के लिये उन्हीं के पास आते थे। इससे उनको बहुत घमंड हो गया और वह अपने आपको उस गॉव का सबसे अच्छा टीचर समझने लगे।

अगर उनसे कोई किसी भी बात पर बहस करता तो मौलवी साहब उसको इतना विश्वास दिलाते कि उसको उनकी बात माननी ही पड़ती।

[36] Qazi of Jaunpur – a folktale from UP, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/uttar_pradesh_folktale_indian_folktale.htm

एक दिन मौलवी साहब अपने एक विद्यार्थी से बहुत नाराज हो गये। उन्होंने उसके कान पकड़े और उसको खूब मारा और बोले — "अगर जितनी मेहनत मैंने तेरे साथ की है उससे आधी मेहनत भी मैंने किसी गधे के साथ की होती तो वह भी आदमी बन जाता।"

उसी समय जुम्मन नाम का एक आदमी उनके स्कूल के सामने से गुजर रहा था। उसने मौलवी साहब के ये शब्द उस स्कूल की खिड़की से आते सुने।

जुम्मन एक मजदूर था और बेचारा बहुत गरीब था। वह दूसरे लोगों का सामान इधर से उधर ले जा कर अपना गुजारा करता था जैसे ईंटें गेहूँ के बोरे चावल सब्जियाँ आदि।

इस सामान को ले जाने के लिये उसके पास एक गधा था। उसका यह गधा बहुत ही सुस्त था और काम बिल्कुल नहीं करना चाहता था।

सो जब मौलवी साहब को उसने यह कहते सुना कि थोड़ी ही मेहनत से वह एक गधे को आदमी बना सकते हैं तो वह बहुत खुश हुआ।

उसने सोचा कि वह अपना गधा ला कर मौलवी साहब को दे देगा और वह उसको आदमी बना देंगे। तब वह गधा उसके बेटे की तरह काम करेगा। उसका बुढ़ापा सुधर जायेगा और खुशी से बीतेगा।

सो अगले दिन वह अपना गधा ले कर मौलवी साहब के पास पहुँचा और उनसे प्रार्थना की कि वह उसके गधे को आदमी बना दें। पहले तो मौलवी साहब की समझ में नहीं आया कि वह गधे को आदमी कैसे बना सकते हैं पर जब जुम्मन ने उनको पिछले दिन की घटना बतायी तो उनकी समझ में आ गया कि मामला क्या था।

अब मौलवी साहब इतने बेवकूफ भी नहीं थे उन्होंने सोचा कि यह तो कुछ पैसे बनाने का अच्छा मौका है सो उन्होंने जुम्मन से कहा — "भाई एक गधे को आदमी बनाना आसान नहीं है।

उसके लिये मुझको कुछ खास चीज़ें चाहिये जिनको मैं कूट पीस कर तैयार करूँगा जिसमें मुझे हफ्तों लग जायेंगे। इसके अलावा उसमें पैसा भी काफी लगेगा। तब कहीं जा कर मैं किसी गधे को आदमी बना सकता हूँ।"

जुम्मन को तो एक बेटा चाहिये था सो वह मौलवी साहब की हर शर्त मानने को तैयार हो गया। मौलवी साहब ने उससे सौ रुपये माँगे तो जुम्मन ने तुरन्त ही उनको सौ रुपये निकाल कर दे दिये। मौलवी साहब ने जुम्मन से वे रुपये ले कर रख लिये और उससे बारह दिन बाद आने के लिये कहा।

जुम्मन सब कुछ बिल्कुल पक्का कर लेना चाहता था सो उसने कहा कि वह पन्द्रह दिन बाद आयेगा।

उधर मौलवी साहब ने भी जुम्मन का एक दो दिन तो इन्तजार किया कि शायद जुम्मन कहीं अपना मन न बदल ले पर जब चार

पॉच दिन तक भी जुम्मन उनके पास नहीं आया तो उन्होंने उस गधे को पचास रुपये में बेच दिया।

उन रुपयों से उन्होंने अपने लिये कुछ नये कपड़े खरीदे जूते खरीदे और पूरे हफ्ते दावत उड़ायी।

पन्द्रह दिन के बाद जुम्मन वापस आया और उसने मौलवी साहब से अपने गधे के बारे में पूछा तो मौलवी साहब ने कुछ बात बना दी। उन्होंने कहा कि उस गधे को आदनी बनाने के लिये उन्होंने काफी सारी चीज़ें मिला दी थीं सो अब वह गधा केवल आदमी ही नहीं बल्कि जौनपुर का काज़ी बन गया है।

यह खबर सुन कर तो जुम्मन के खुशी का पारावार न रहा। वह तो एक बदला हुआ आदमी लगने लगा। वह तो तन कर खड़ा हो गया और बोला "मैं जौनपुर जा रहा हूॅ अपने बेटे से मिलने।"

और यह कह कर वह पलटा और वहॉ से बाहर सड़क पर निकल गया।

जब वह जौनपुर पहुॅचा तो वह वहॉ के काज़ी से मिलने के लिये तैयार हुआ। उसने काज़ी की कचहरी का रास्ता ढूॅढा और दरवाजे पर खड़े दरबानों को पीछे छोड़ता हुआ सीधा अन्दर चला गया।

वहॉ का काज़ी उस समय दो दूकानदारों के बीच का झगड़ा सिलटा रहा था। जुम्मन सीधा वहॉ जा कर काज़ी के सामने खड़ा हो गया। कुछ मजाक सा करते हुए जुम्मन ने काज़ी से पूछा कि अब उसको गधे से काज़ी बन कर कैसा लग रहा था।

इस सवाल से तो काज़ी बहुत गुस्सा हो गया और उससे पूछा कि वह कौन था। जब दरबानों ने उसको पकड़ने की कोशिश की तो उसको पकड़ना तो उनको लिये बहुत मुश्किल हो गया। वह वहॉ से बच कर भाग गया।

पर वह एक बार फिर से काज़ी के सामने गया और उससे फिर से पूछा कि उसको गधे से काज़ी बनने में कैसा लग रहा है। काज़ी की समझ में तो यह बिल्कुल ही नहीं आया कि वह कह क्या रहा था सो उसने उसको पकड़वा दिया। वह रात उसने जेल में काटी।

पर इससे मामला तो नहीं सुलझता था सो अगले दिन वह फिर काज़ी की कचहरी लौटा और काज़ी से बोला — "अरे बेवकूफ गधे तुझको आदमी बनाने से क्या फायदा तुझको तो गधा ही रहना चाहिये था।"

अब तक काज़ी को पता चल गया था कि यह आदमी कोई पागल था सो उसने भी उससे कुछ मजाक करने की सोची। उसने जुम्मन से पूछा कि वह क्या चाहता था। जुम्मन ने तुरन्त कहा मुझे पॉच सौ रुपये चाहिये।

काज़ी ने उसको एक थैला दिया और अपनी कचहरी से जाने के लिये और फिर वहॉ कभी न आने के लिये कह कर उसको बाहर निकलवा दिया।

जुम्मन ने भी वह थैला लिया और अपने गॉव चला गया। गॉव जा कर उस पैसे से उसने एक और गधा खरीद लिया और अपना पहले वाला काम शुरू कर दिया।

भला हो उस जौनपुर के काज़ी का कि जिसकी सहायता से अब जुम्मन और उसकी पत्नी ने अपनी बाकी की ज़िन्दगी आराम से गुजारी।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन – प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**